ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
रविवार, 26 जुलाई 2026
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र
सप्ताह रविवार, 26 जुलाई 2026 से 01 अगस्त 2026
आषाढ़ शु. 12 • वि० सं०-2082 • वर्ष 67, अंक 30, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 202 • सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 • पृ.सं. 1-12 • मूल्य - 5/- रु. • वार्षिक शु. 300/- रु.

डी.ए.वी. कॉलेज, जालंधर में यज्ञ के साथ नवसत्र का शुभारम्भ

डी.ए.वी. कॉलेज, जालंधर में नवीन शैक्षणिक सत्र 2026–27 के शुभारम्भ पर यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य यजमान के रूप में उप प्राचार्य डॉ. कुँवर राजीव उपस्थित रहे। विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने हवन यज्ञ में आहुतियाँ डालकर सभी की उन्नति के लिए प्रार्थना की।

डॉ. कुँवर राजीव ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में डी.ए.वी. परिवार के शिक्षकों की उत्कृष्ट कार्यसंस्कृति और निरंतर समर्पण की सराहना की और कहा कि हम सब गत शैक्षणिक सत्र की अपेक्षा अपनी कार्यक्षमता, अनुशासन तथा उपलब्धियों में और

अधिक वृद्धि करने का सतत् प्रयास करें। उन्होंने नवीन शैक्षणिक सत्र के सफल, समृद्ध एवं उपलब्धिपूर्ण होने की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

कार्यक्रम का समापन स्टाफ सचिव द्वारा प्रस्तुत औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। डॉ. ऋषि ने शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के समर्पण, परिश्रम एवं कर्तव्यनिष्ठा की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अनूप कुमार के प्रति गहन आभार व्यक्त किया।

हवन यज्ञ के पश्चात् सभी ने प्रसाद एवं जलपान ग्रहण किया। यज्ञ का सफल संचालन आर्य युवा समाज परिषद् की संचालिका प्रो. ऋतु तलवाड़, प्रो. विवेक शर्मा, डॉ. रिचा नांगला के सहयोग से संपन्न हुआ। इस पावन अवसर पर महाविद्यालय के अनेक गणमान्य अधिकारी एवं प्राध्यापक उपस्थित रहे।

डी.ए.वी. अहमदाबाद में पुराने कपड़े नया जीवन-एक नया प्रयोग

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल अहमदाबाद में पर्यावरणीय चुनौतियों से निबटने का एक नया प्रयोग किया गया। 'पर्यावरण अनुकूल' पहल के अंतर्गत छात्रों से पुरानी यूनिफॉर्म मँगवाई गई और उनसे थैले तैयार किए गए। ये थैले नर्सरी से जूनियर के. जी. तक के बच्चों द्वारा प्रयोग किए जाएँगे जिससे 'प्लास्टिक मुक्त' जीवन–शैली को बढ़ावा मिलेगा। छात्रों की इस पहल को शीर्षक दिया गया 'D.A.V. Eco Warriors. अभियान'।

प्रधानाचार्य श्री दीपक गौतमपुरकर ने कहा कि सुपरवाईजरी हेड श्रीमती अनुभा छीब्बा जी, श्रीमती वैशाली नियोगी जी और संबंधित शिक्षकों ने इस 'अभियान' के द्वारा वंचित महिलाओं को रोजगार भी दिया है। 'वस्त्र कचरे' को नया रूप देने का संकल्प ही पर्यावरण चेतना का मार्ग है।

प्राचार्य ने कहा कि सम्पूर्ण विश्व अनेक 'पर्यावरणीय चुनौतियों' का सामना कर रहा है। इनमें से एक 'वस्त्र कचरे' की समस्या ने गंभीर संकट का रूप ले लिया है। आर्यसमाज के छठे नियम का अनुसरण करते हुए इस संकल्प से समाज की उन्नति होगी।

डी.ए.वी. साहिबाबाद की अनूठी पहल : वैदिक परंपरा से जुड़ते अभिभावक

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, साहिबाबाद में प्रतिदिन वैदिक यज्ञ का आयोजन किया जाता है, यह प्रक्रिया विद्यार्थियों के सूत्र में पिरोने का सशक्त प्रयास बन गई है।

यह अनूठी पहल अभिभावकों के बीच अत्यंत प्रशंसित हो रही है। विद्यालय

में अनुशासन, आत्मविश्वास, नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक चेतना तथा भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा का भाव विकसित करती है।

प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका मेहन ने बताया कि प्रत्येक अभिभावक–शिक्षक बैठक (PTM) के अवसर पर अभिभावकों को भी यज्ञ में सहभागी बनाया जाता है। यह पहल केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि विद्यालय परिवार और समाज को वैदिक संस्कारों में आयोजित इन यज्ञों में बड़ी संख्या में अभिभावक उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हैं। संस्कार निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानते हैं।

अभिभावकों का कहना है कि आज के समय में ऐसे अनुष्ठानों से विद्यालय विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों एवं सकारात्मक जीवन–दृष्टि का विकास कर रहा है। वे इस प्रेरणादायी पहल के लिए विद्यालय प्रशासन एवं प्राचार्या का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

जो जीवों को देने योग पदार्थों का दाता और ग्रहण करने योग्यों का ग्राहक है, इससे उस ईश्वर का नाम **'होता'** है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 26 जुलाई 2026 से 01 अगस्त 2026

हे सोम! हृदय–कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्व सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरितातिपारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **जगती**।

● (**सोम**) हे सोम परमात्मन्! (**तू**), (**वृषा**) वर्षक (**होता हुआ**), (**देववीतये**) दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, (**पवस्व**) प्रवाहित हो, (**इन्द्रस्य**) आत्मा के, (**हार्दि**) हृदय–रूप, (**सोमधानं**) सोम–कलश में, (**आविश**) प्रविष्ट हो।, (**बाधात्**) बाधे जाने से, (**पुरा**) पहले, (**नः**) हमें, (**दुरिता अति**) पापचरणों से लंघाकर, (**पारय**) पार करदे। (**क्षेत्रवित्**) मार्ग का ज्ञाता, (**विपृच्छते**) विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, (**दिशः**) दिशाओं को, (**आह हि**) बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

'एक ही रास्ता' पुस्तक में स्वामी जी का हृदय विदारक व्याख्यान है। इसे पढ़कर ही पाठक को इस कदर रोमांच हो जाता है कि वह जीवन भर इस विषय पर, इस घटना पर चिन्तन करता है, स्मृति में रखता है। परन्तु जिस व्यक्ति ने ऐसी विषम परिस्थिति को स्वयं भुगता हो, कैसी भयानक स्थिति का सामना स्वामी जी ने पर्वतों पर रहकर किया और यह स्थिति ऐसी भयानक हो चली थी कि स्वामी जी ने अपनी मृत्यु इसी स्थान पर निश्चित मान ली थी, वसीयत लिख दी थी, परन्तु सर्वरक्षक वह परमात्मा तो स्वामी जी के कल्याण के लिए हर पल ताना–बाना बुन रहा था। स्वामी जी के लिए कहीं से भी सहायता भेज रहा था और जब सहायता संभव नही थी तब पाँव ठीक कर पैदल चला दिया। वाह परमपिता परमात्मा, तेरी कारीगरी अपरम्पार है। तू तो हमारा उत्पादक, रक्षक, सहायक बनकर हर पल हमारा कल्याण कर रहा है। हम ही न समझें तो इसमें किसका दोष है ? यही ईश्वर की कारीगरी, उस पर विश्वास, उसकी महानता को बहुत ही भावुक शब्दों में स्वामी जी हमें सरलतम उदाहरणों से समझा रहे हैं।

... अब आगे

कथा का दूसरा दिन

प्यारी माताओ तथा सज्जनो !

ओ३म् की बात कह रहा था मैं आपसे। यह भी कह रहा था कि बुद्धि के ठीक होने से सब कुछ ठीक हो जाता है। बुद्धि के बिगड़ने से सब कुछ बिगड़ जाता है। तीन प्रकार की बुद्धि बताई थी मैंने–बुद्धि, सुबुद्धि और कुबुद्धि। फिर यह भी कहा कि बुद्धि के ऊपर मेधा है, ऐसी बुद्धि है जो धारणा करती है, मर्यादा बतलाती है, मर्यादा में रखती है, पुकारकर कहती है–धन अवश्य कमाओ परन्तु इस पर साँप बनकर नहीं बैठ जाओ। उसे स्वयं खर्च करो, दूसरों को दान दो। देखो कि तुम्हारे निकट कोई भूखा तो नहीं मर रहा है, यदि ऐसी बात है तो तुम्हारा धन कमाना बेकार है, अर्थहीन है। दान कर दो। उसे दे दो उनको, जो उसके बिना जीवन से हताश हुए जाते हैं। हाँ, दान दे दो परन्तु वह भी मर्यादा से। इस प्रकार नहीं कि तुम स्वयं भी भूखे मर जाओ। किसी भी ओर अति न करो।

अति का भला न बोलना,
अति की भली न चुप्प।
अति का भला न बरसना,
अति की भली न धुप्प।।

हर वस्तु मर्यादा में अच्छी लगती है। मर्यादा में रहे तो सुख देती है। मर्यादा को सिखाने वाली बुद्धि का नाम मेधा है। इसके पश्चात् एक और बुद्धि है जिसे प्रज्ञा कहते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान से ऊपर जाकर यह प्रज्ञा नाम की बुद्धि प्रकट होती है। इससे ऊपर है प्रतिभा, जिसके प्राप्त होते ही अन्तरात्मा में ज्योति जाग उठती है, आत्मा की आँख खुल जाती है, आत्मा की आवाज़ सुनाई देने लगती है। इससे भी ऊपर है वह बुद्धि जिसे ऋतम्भरा कहते हैं, जो केवल सत्य को देखती है, जो सदा रही है, सदा रहती है, सदा रहेगी। रजस् और तमस् दोनों गुण जब परे हट जाते हैं, केवल सत्त्व गुण शेष रह जाता है, तब यह ऋतम्भरा बुद्धि जाग उठती है।

मेधा से ऋतम्भरा तक ले–जाने वाली शक्ति कहाँ से मिलती है, यह भी सुनिये ! ध्रुव की कथा तो आप जानते हैं। छोटा–सा वह बालक एक आसन में बैठकर घोर तप कर रहा था। हर प्रकार के मोह को त्यागकर, भक्ति में मग्न होकर, दुनिया को भूलकर, भगवान् को याद कर रहा था। तभी भगवान् जागती ज्योति बनकर उसके सामने या खड़े हुए, बोले –"अरे ओ नन्हे भक्त ! बोल, क्या चाहता है तू ? माँग, क्या माँगता है ? मैं आ गया हूँ।"

ध्रुव ने कहा–"मैं व्यापारी नहीं, सब–कुछ देकर कुछ लेने को नहीं आया। मैं केवल भक्ति के लिए भक्ति

करता हूँ। मैं तुमसे तुमको मांगता हूँ।"

यह है मेधा से ऋतम्भरा तक पहुँचने का ढंग। पूर्ण श्रद्धा, अटल विश्वास और सच्चे ज्ञान के साथ ईश्वर–भक्ति और उस ईश्वर–भक्ति का सबसे सीधा, सबसे सरल और सबसे महान् मार्ग है ओ३म्।

इस मन्त्र को हमारे ऋषियों ने आर्य–जीवन में ओतप्रोत कर दिया है। बच्चे का जन्म हो तो आज्ञा है कि सोने की सलाई पर शहद लगाकर उसकी जिह्वा पर 'ओ३म्' लिखो। उसके कान में 'ओ३म्' कहो जिससे उसे ज्ञात हो कि वह ओ३म् ही उसका रक्षक है। उसपर उसे जीवन–भर विश्वास करना है। मृत्यु के समय के लिए उन्होंने कहा–"ओ३म् का उच्चारण करो। ओ३म् का उच्चारण करता हुआ जो व्यक्ति मरता है वह सीधा सूर्यलोक में जाता है,जो नहीं करता वह नीचे के लोकों की ओर गिरने लगता है।" छान्दोग्य–उपनिषद् के पहले प्रपाठक में यह बात आती है और बात शत–प्रतिशत सत्य है। आत्मा का निवास सूक्ष्म शरीर में है, जो दोनों छातियों के बीच में हृदय के निकट रहता है। मनुष्य के अन्दर हृदय जैसे सारे जीवन का केन्द्र है, उसी प्रकार इस दुनिया में यह सूर्य है। सूर्य से नीली, पीली, हरी, लाल आदि रंगों की किरणें निकलकर इस संसार को जीवन देती हैं। हृदय से नीली, पीली, लाल और हरी नाड़ियाँ निकलकर सारे शरीर में पहुँचती हैं; सारे शरीर को जीवन देती हैं। मनुष्य के अन्दर हृदय समाप्त हो जाए या उसे हानि पहुँचे तो सारा शरीर समाप्त हो जाता है, मृत्यु आ जाती है; दुनिया में यदि सूर्य न रहे तो दुनिया मर जाती है। सूर्य और हृदय दोनों में गहरा सम्बन्ध है। अपने–अपने स्थान पर दोनों केन्द्र हैं; दोनों से किरणें निकलती हैं, इन किरणों के कारण दोनों के मध्य में एक सीधी पक्की सड़क बन गई है। जिन लोगों के हृदय की गति उस समय बन्द होती है, जब वे ओ३म् का जाप कर रहे हैं, उसका ध्यान कर रहे हैं और उसका उच्चारण कर रहे हैं, उनका सूक्ष्म शरीर बिना किसी कष्ट के उस साफ़, सीधी और पक्की सड़क पर आगे बढ़ता है। परन्तु अन्त समय में ओ३म् का जाप प्रत्येक व्यक्ति तो नहीं कर सकता। केवल वे लोग कर सकते हैं जिन्होंने जीवन–भर उसका जाप किया हो, जीवन–भर उसकी साधना की हो। ऐसे लोगों के लिए यह ***'ग्राण्ड ट्रंक रोड'*** अन्त में अपने दरवाज़े खोल देती है; भुजा पसारकर कहती है, "आओ, मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँ जहाँ परम ज्योति है।"

छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि ने यह भी बतलाया कि ओ३म् की उपासना करनेवाले मनुष्य की शक्ति किस प्रकार बढ़ती है, कहाँ तक बढ़ती है और किस प्रकार प्रभाव करती है। ऋषि ने कहा, "जैसे कठोर पत्थर के साथ, लोहे जैसी चट्टान के साथ टकराकर मिट्टी का ढेला चकनाचूर हो जाता है, वैसे ही वह आदमी नष्ट हो जाता है जो ओ३म् की उपासना करनेवाले को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है।"

उपासना करनेवाले के लिए कितनी बड़ी बात है यह। वह स्वयं किसी को हानि नहीं पहुँचाता, स्वयं किसी के लिए बुरा नहीं सोचता, परन्तु इस महामन्त्र की अनन्त शक्ति उस पापी को समाप्त करके रख देती है जो ओ३म् के भक्त को हानि पहुँचाना चाहता है। इससे पूर्व कि वह रक्षा करने वाली परमशक्ति के प्रेम को हानि पहुँचा सके, यह महान् शक्ति उसको चकनाचूर करके रख देती है।

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के उपासना काण्ड में महर्षि दयानन्द ने भी बताया कि ईश्वर की भक्ति, ईश्वर की उपासना कैसे करें। क्या किसी घने भयानक जंगल में चले जाएँ ? घर–बार छोड़ दें ? किसी वृक्ष–विशेष या नदी–विशेष की शरण लें ? क्या ऐसा किये बिना भक्ति नहीं हो सकती ? महर्षि कहते हैं, "अरे भोले मनुष्य, हो सकती है।" उनके शब्द हैं–

"जो ईश्वर का ओ३म् नाम है, वह पिता–पुत्र के सम्बन्ध की तरह है और यह नाम ईश्वर को छोड़कर और किसी अर्थ के लिए प्रयुक्त नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं, उन सबमें से ओंकार सबसे उत्तम नाम है।"

कितनी महिमा है ओ३म् नाम की ! जब ब्राह्मण ग्रन्थों को देखें, गोपथ ब्राह्मण को, शतपथ ब्राह्मण को और दूसरे ब्राह्मण ग्रन्थों को, तो ज्ञात होता है कि ओ३म् का नाम ही आत्मा की सबसे बड़ी दवा, सबसे बड़ी चिकित्सा है। आत्मा रोगी है न ! जन्म–जन्म की मैल जम गई है इसके ऊपर, जन्म–जन्म के पाप–ताप और कष्ट देनेवाले संस्कार जमा हो गये हैं इसके ऊपर। उस मैल को, उन बीमारियों को दूर करने का उपाय क्या है ? शतपथ ब्राह्मण कहता है–"आत्मा की चिकित्सा और आत्मा का मोक्ष भी ओ३म् ही है।" यह अद्भुत–सी बात लगती है, परन्तु विचार से देखिये यह कितनी सत्य है। बन्धनों में फँस गया है आत्मा। इनसे छूटना चाहता है। यह कैसे छूटेगा ? बड़ी–बड़ी दीवारें खड़ी हो गई हैं इसके आसपास। उनके अन्दर इसका दम घुटा जाता है। बाहर आने की इच्छा है। वह बाहर कैसे आयेगा ? पहले दीवार टूटनी चाहिए, बन्धनों का अन्त होना चाहिए। इसलिए ऋषि ने कहा – "ओ३म् ही आत्मा की चिकित्सा है।" परन्तु बन्धन से मुक्ति पाकर होता क्या है ? क्या नये बन्धनों की ओर बढ़ना चाहिए ? क्या आत्मा को नई दीवारें खड़ी करनी चाहिएँ अपने चारों ओर ? नहीं मेरी माँ ! नहीं मेरी बच्ची ! यह तो आत्मा का लक्ष्य नहीं। आत्मा का लक्ष्य है ओ३म्। इसीलिए ऋषि ने कहा, "आत्मा का मोक्ष भी ओ३म् है।" ओ३म् रास्ता है, लक्ष्य भी है (इस ग्रन्थ में आगे चलकर यह भी कहा कि ओ३म् ही आत्मा है)।

और माण्डूक्य उपनिषद् सारे–का–सारा ओ३म् की व्याख्या और महिमा से भरा है।

बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य जी कहते हैं, "ओ३म् के जाप से पाप नष्ट होते हैं, जल जाते हैं, भस्म हो जाते हैं। प्राणायाम के द्वारा प्राणों को वश में करके धारणा और ध्यान की अवस्था से ऊपर उठकर जब भक्त ओ३म् का अजपा जाप करता है और उस जाप में और सबको, अपने–आपको भी भूल जाता है तो इसके सभी पाप, सभी बुरे कर्म, इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे प्रचण्ड भास्कर के निकलने पर अन्धकार समाप्त हो जाते हैं।" यह सब कुछ ओ३म् के जाप से होता है।

पुराणों के अन्दर भी ओ३म् की महिमा बार–बार वर्णन की गई है। अग्निपुराण के 215 वें अध्याय के ये शब्द सुनिये, "जा ओंकार को जानता है वही योगी है, वही रुकावटों का नाश करनेवाला है। सारे मन्त्रों का सार यह ओ३म् है। इसकी सहायता से पापी भी इस अथाह भव–सागर से पार उतर जाते हैं।" कैसे उतर जाते हैं ? क्यों उतर जाते हैं ? इसका उत्तर प्रश्नोपनिषद् देता है। इस उपनिषद् का पाँचवाँ प्रश्न सब–का–सब ओ३म् के सम्बन्ध में है। सत्यकाम महर्षि पिप्पलाद से पूछता है, "गुरुदेव, सारी आयु ओ३म् के जाप करने का फल क्या है ?" पिप्पलाद कहते हैं, "इस ओ३म् से आत्मा वहाँ पहुँचता है, जहाँ ऊपर ब्रह्म और परब्रह्म का साक्षात् हो जाता है।" अपर ब्रह्म भगवान् का विश्वभर में फैला हुआ विराट् रूप है। इसी को देखकर वेद **"नमः विश्वरूपाय"** कहता है। हम यहाँ बैठे हैं, इससे परे दीवारें हैं ! दीवारों से परे मकान या सड़क, उनसे परे और मकान और सड़कें – सारा नगर। इस नगर से आगे कुछ खाली जगहें हैं, खेत हैं, जंगल हैं, उनसे परे और नगर हैं, और गाँव हैं। उनके परे फिर खाली ज़मीन, फिर नगर, फिर ज़मीन, फिर नगर, पहाड़, नदियाँ, नाले, झीलें, मरुस्थल, इन सबको हम एक देश कहते हैं। इस देश के तीन ओर एक सागर लहराता है। एक ओर हिमालय खड़ा है। इनसे परे और देश हैं, और सागर, और पहाड़, और मरुस्थल हैं। इस प्रकार यह पृथिवी है, सूर्य की रोशनी में चमकती हुई, उसकी रोशनी के बिना अँधेरी। पृथिवी और सूर्य के बीच में बुध और शुक्र हैं। पृथिवी से परे मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण और ब्रह्म नाम के तारे हैं। यह हमारा सौर मण्डल है। ऐसे अरबों सौर मण्डल हैं इस विश्व में, खरबों मीलों में फैले हुए। रात के समय हम जो तारे देखते हैं, उनमें से प्रत्येक तारा एक सूर्य है, हर सूर्य के साथ कितने ही ग्रह हैं। मानवी विज्ञान, मानवी ज्ञान और मानवी कल्पना के अनुसार अनन्त विश्व हैं। इसका अन्त दिखाई नहीं देता और इस विश्व के एक–एक कण में, सामने जलती हुई इस छोटी–सी बत्ती में, और लाखों मील ज्वालाएँ फेंकते हुए सूर्य में, इस पृथिवी पर, पृथिवी से परे सौर मण्डल के दूसरे ग्रहों पर, उनसे परे दूसरे सौर–मण्डलों में, अरबों–खरबों सूर्यों में ईश्वर की शक्ति कार्य करती है, ईश्वर की ज्योति चमकती है। पृथिवी की नीची–से–नीची गहराई में, आकाश की ऊँची–से–ऊँची चोटियों पर, हर ओर, हर स्थान पर, हर समय वह ही वह है। यह उसका अपर ब्रह्म रूप है, जिसे ओ३म् का जाप करने– वाला हाथ पर रखे खिलौने की भाँति देखता है। परन्तु उससे ऊपर, उससे परे भी तो ब्रह्म है– विश्व से परे, प्रकृति से परे, परम कल्याण रूप, परम शान्त, परमानन्द, परमेश्वर, परब्रह्म।

ओ३म् का जाप करनेवाला ईश्वर के दोनों रूप देखता है। अपर ब्रह्म का रूप इससे आकर कहता है–

रोशन हैं मेरे जलवे हर शे में हाय ! लेकिन
है चश्म कोर तेरी, क्या है क़सूर मेरा ?

और ओ३म् का जाप करते–करते जब भक्त अपने–आपको भूलकर, प्रकृति को भूलकर, अन्तर्धान होकर देखता है, जब बाहर के पट बन्द हो जाते हैं और अन्दर के पट खुल जाते हैं, तब उस परब्रह्म का दर्शन होता है। यह है ओ३म् के जाप की महिमा परन्तु यह जाप होता कैसे है ? वह भी सुनिये ! ओ३म् का जाप तीन प्रकार से होता है–पहला जाप–एक मात्रा का, दूसरा–दो मात्रा का, तीसरा–तीन मात्रा का। एक चार मात्रा का जाप भी होता है परन्तु इसका वर्णन नहीं करुँगा। आप नहीं समझ सकेंगे।

क्रमशः

समाज के सजग चितेरे : प्रेमचन्द

● डॉ. राज श्री शुक्ला उपाध्याय

भारत वर्ष के सामाजिक इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी का मध्यकाल एक संक्रान्तिकाल के रूप में आता है, जहाँ एक ओर तो हमारा देश राजनीतिक रूप से अंग्रेज़ सरकार के शोषण की नीतियों से त्रस्त था, अपनी ही सामाजिक विद्रूपताओं, कुसंस्कारों एवं जड़ मान्यताओं के बंधन में बुरी तरह आबद्ध था; वहीं दूसरी ओर प्राची से उदित होते मार्तण्ड के समान देश में नवीन आधुनिक विचारों के रूप में जागृति का स्वरूप भी प्रदर्शित होने लगा था। इस दिशा में नवजागरण काल के समाज सुधारकों की तो बहुत बड़ी भूमिका थी ही, साथ साथ हिंदी और अन्य भाषाओं के साहित्यकारों ने भी समाज सुधार और सामाजिक परिष्करण के इस यज्ञ को अपने राष्ट्रीय–सामाजिक दायित्व के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने अपनी लेखनी की धार से जैसे मानसिक पराधीनता के बंधनों पर प्रहार किया वैसे ही सामाजिक रूढ़ियों को खण्ड–खण्ड करने का प्रयास किया। इस क्षेत्र में प्रेमचंद जी का नाम अत्यंत महत्त्व और सम्मान के साथ लिया जाता है।

हिंदी साहित्य में 'उपन्यास सम्राट्' और 'कथा सम्राट्' के रूप में ख्यात प्रेमचंद, भारतीय साहित्य जगत् के ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनके लेखन में भारतीय समाज के तत्कालीन यथार्थ की धड़कनें सुनी जाती हैं। वे सच्चे भारतीय जीवन के सजग चितेरे हैं। प्रेमचंद उस भारतीय सामाजिक परिवेश के अंग थे जो छुआछूत, जातिभेद, भ्रष्टाचार, महाजनी शोषण, स्त्री–शूद्रों के प्रति संवेदनहीनता तथा अन्य कुसंस्कारों से पूरी तरह तप्त था। एक संवेदनशील तथा जागरूक व्यक्ति एवं साहित्यकार होने के कारण वे इन बुराइयों से समाज को मुक्त करना चाहते थे। एक विवेकी व्यक्ति के रूप में उन्होंने तत्कालीन सभी श्रेष्ठ विचारों से अपने चिंतन को पुष्ट किया। सामाजिक रूढ़ियों पर तीव्र प्रहार करने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रकाश बहुत उपयुक्त प्रतीत हुआ। तत्कालीन भारत के सभी चिंतक और विवेकवान व्यक्ति उस समय इन्हीं विचारों से प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे। इन विचारों को काल्पनिक पात्रों का आश्रय लेकर अपनी सृजनात्मकता के द्वारा प्रेमचंद ने अपने साहित्य में ढाला और इस प्रकार से सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाई।

अपने साहित्यिक लेखन का प्रारंभ उर्दू भाषा की रचनाओं से करने के बाद प्रेमचंद अधिक बड़े समुदाय तक पहुँचने का लक्ष्य लेकर हिंदी में आए। इन्होंने हिंदी में विपुल साहित्य की रचना की। उन्होंने अनेक उपन्यास लिखे एवं बहुत बड़ी संख्या में कहानियाँ लिखकर हिंदी साहित्य के क्षेत्र को बड़ी समृद्धि प्रदान की। ***निर्मला, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र***–इत्यादि इनके प्रमुख उपन्यास हैं, जिनसे हिंदी साहित्य गौरवान्वित है। **"मानसरोवर"** शीर्षक से सात विशालकाय संग्रहों में इनकी कहानियाँ संकलित हैं। वे स्वयं को कलम का मज़दूर कहते थे और मानते थे कि जब तक प्रतिदिन कुछ लिख न लें, तब तक उन्हें भोजन का अधिकार नहीं। विश्व की अनेक भाषाओं में उनके साहित्य का अनुवाद किया गया है। ऐसा भी कह सकते हैं कि प्रेमचंद के साहित्य के माध्यम से एक बड़े विश्व–समुदाय को भारत के सामाजिक जीवन का परिचय प्राप्त हुआ है। प्रेमचंद के उपन्यासों में भारतीय ग्रामीण समाज का वास्तविक जीवन बिल्कुल सहज और यथार्थ रूप में प्रकट हुआ है। यहाँ तक कि यह भी कहा जाता है कि उत्तर भारत का इतिहास पढ़ना हो तो प्रेमचंद के उपन्यासों को पढ़ लिया जा सकता है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य और जीवन की यह बड़ी उपलब्धि होती है, कि समाज उसमें अपना अक्स देखने लगे। प्रेमचंद मात्र कथाकार ही नहीं बल्कि निबंधकार और विचारक भी रहे। वे मानव से मानव की समानता के विचार पर विश्वास करते थे। मनुष्य मात्र को एक समान मान कर उन्होंने उनके बीच ऊँच–नीच और भेदभाव की खाइयों को पाटने की कोशिश की। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में मनुष्यता के मूल्य को सर्वोच्च मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। मानवीय संवेदनशीलता से बड़ा और कोई धर्म नहीं है। साहित्य का वास्तविक लक्ष्य मनुष्य के हृदय की इसी संवेदना को जगाना है। सत्यनिष्ठा, त्याग, राष्ट्रीयता, देशप्रेम जैसे आदर्श भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति प्रेमचंद जी का स्वाभाविक आग्रह था। अपनी अधिकांश कहानियों में उन्होंने इन्हीं मूल्यों की प्रतिष्ठा की है। 'पंच परमेश्वर' नामक प्रसिद्ध कहानी में इन्होंने दिखाया है कि एक भारतीय ग्रामीण के मन में न्याय के लिए निष्पक्षता और सच्चाई इतनी गहरी पैठी हुई है कि जब कोई सामान्य व्यक्ति भी न्याय के आसन पर बैठता है, तो वह मानवीय राग द्वेष से ऊपर उठकर सत्य के पक्ष में ही अपनी राय रखता है। जुम्मन शेख और अलगू चौधरी के माध्यम से इस कहानी में प्रेमचंद ग्रामीण परिवेश , मानवीय भावनाओं के उतार चढ़ाव और न्याय की गरिमा को अत्यंत संवेदनशील तरीके से स्पष्ट कर देते हैं।

स्वदेशी जागरण और राष्ट्रीयता के प्रति इनकी रचनाओं में प्रबल आग्रह परिलक्षित होता है। ***'दुनिया का सबसे अनमोल रतन'*** प्रेमचंद की प्रारंभिक कहानियों में से एक है, जो 'सोज़े वतन' नामक कहानी संग्रह में प्रकाशित हुई। अपने राष्ट्रीय तेवर में लिखी कहानियों के कारण बाद में अंग्रेज़ सरकार ने इसे ज़ब्त भी कर लिया था। यह कहानी देशभक्ति के भाव से ओतप्रोत है और देशप्रेम को प्रेम की पराकाष्ठा के रूप में परिभाषित करती है। इस कहानी में प्रेमचंद ने दुनिया के सब से अनमोल रतन की तलाश करते हुए, अन्य सभी बहुमूल्य वस्तुओं की तुलना में फाँसी के तख्ते पर झूल गए शहीद के ख़ून की बूँद को जीवन का सब से अनमोल रतन बताया। कहानी में स्पष्ट है कि तन–मन–धन से मातृभूमि की रक्षा करना और देश की आज़ादी के लिए बहाया गया खून का आखिरी कतरा ही दुनिया का सबसे अनमोल रतन है।"

साहित्य के समान ही प्रेमचंद अपने जीवन में भी मूर्तिपूजा, छुआछूत तथा अन्य पाखंडों का विरोध करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। एक बार रेलगाड़ी में यात्रा करते हुए बहुत से गरीब यात्रियों से उनका सामना हुआ। वे ग्रामीण अपने जीवन की गाढ़ी कमाई से बहुत रुपए खर्च करके शीतला माता के दर्शन कर लौट रहे थे। उनकी अवस्था देखकर बहुत दुखी होकर प्रेमचंद ने कहा था, "इसका मतलब तुम लोगों ने चार महीने के खाने का गल्ला बेच दिया। इससे तो अच्छा होता कि देवी जी की पूजा तुम घर में ही कर लेते। देवी जी तो सभी जगह रहती हैं।" भारतीय सामाजिक जीवन में मंदिरों का एक बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। वे समाज की सामूहिकता के केंद्र होते हैं। प्रेमचंद मानते थे कि इन्हें वस्तुतः सामाजिक निर्माण का केंद्र होना चाहिए ,परंतु वास्तविकता इसके पूर्णतः विपरीत थी। मंदिरों की दुर्दशा देखकर प्रेमचंद ने अनेक स्थानों पर इन्हें अनाचारों का गढ़ भी स्वीकार किया। उन्होंने अपने एक लेख में लिखा–"हिंदू समाज के परम पवित्र और माननीय इन मंदिरों की दुर्दशा देखकर मन काँप उठता है। जहाँ भक्ति, ज्ञान और तपस्या की निर्मल धारा बहनी चाहिए, वहाँ दुराचार, पापाचार, भ्रष्टता और दुष्कृत्यों का केंद्र देखकर आत्मा रो उठती है।" इसलिए इन्होंने अनपढ़ और क्षुद्र मानसिकता वाले पोंगापन्थी ब्राह्मणों की मिथ्या धर्मनिष्ठा, सामाजिक आडंबर, महाजनों के द्वारा लूट खसोट, अंग्रेज़ी सरकार के शोषण, ग्रामीणों के मन–जीवन के बीच जड़ जमा कर बैठी हुई रूढ़ियों इत्यादि का अपने साहित्य के माध्यम से तीव्र विरोध किया है।

प्रेमचंद अपने व्यक्तिगत जीवन में भी सभी सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करने को तत्पर रहे। इस दिशा में उन्होंने अनेकशः स्पष्ट रूप से इंगित किया है कि स्वामी दयानंद एवं आर्य समाज के सिद्धांतों ने उन्हें अंधविश्वासों का विरोध करने के लिए प्रेरित किया। अपने जीवन के प्रथम अनमेल विवाह से असंतुष्ट होने पर इन्होंने एक आर्य समाजी पत्र में प्रकाशित विज्ञापन का सहारा लेकर एक आर्य समाजी परिवार की बाल विधवा कन्या शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया था, और उससे सुखी हुए थे। उन्होंने अपने विवाह की चर्चा करते हुए बहुत साफ शब्दों में कहा–**"मैं तो धन्यवाद देता हूँ दयानंद को, जिन्होंने आर्य समाज का प्रचार करके स्त्रियों का और समाज का बड़ा उद्धार किया।"** समाज की जड़ प्रथाओं पर प्रहार करने में वे इतने सजग थे कि अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर उन्होंने अपनी पुत्री का कन्यादान करने से इनकार कर दिया था। उन्होंने कहा–दान तो बेजान वस्तुओं को किया जाता है, मैं अपनी पुत्री को दान नहीं करुँगा, बल्कि इसका पाणिग्रहण करवाऊँगा। अपने समस्त साहित्यिक कृतित्व के माध्यम से इन्होंने अस्पृश्यता का विरोध कर मानवीय गरिमा की रक्षा और स्त्री शिक्षा के महत्व पर ज़ोर दिया।

प्रेमचन्द यह मानते थे कि साहित्य का उद्देश्य जीवन के सत्य को प्रभावी और मार्मिक रूप से अभिव्यक्त करना है। उन्होंने लिखा–

"साहित्य उसी रचना को कहेंगे, जिसमें कोई सचाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

गतांक से आगे...

52. मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका कार्य

'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' का चतुर्थ संस्करण पं. युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित अन्तिम ग्रन्थ था तो उनके द्वारा लिखित **'मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका कार्य'** उनके जीवन की अन्तिम कृति थी। यह पुस्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के लेखकीय जीवन के विभिन्न पड़ावों पर प्रकाश डालती है। स्वामी दयानन्द के सहायक पण्डितों की अज्ञता तथा स्वार्थपरता को भी सामने लाती है। दयानन्द के विचारों के उत्तरोत्तर विकास–क्रम के साथ–साथ ऋषि के ग्रन्थों के सम्पादन के लिए किन तथ्यों पर ध्यान रखना आवश्यक है, इसे भी सोदाहरण प्रस्तुत करती है तथा ऋषि की वेदार्थ–क्रान्ति सामान्य घटना नहीं अपितु आधुनिक भारत के इतिहास की यह युगान्तर फलश्रुति है तथा इसे भी सप्रमाण परिपुष्ट करती है। ऋषि के जीवन चरित, ऋषि का पत्र व्यवहार–उपदेश–व्याख्यान तथा शास्त्रार्थ–इन सभी की सहायता से हम ऋषि के दाय (Legacy) को ठीक–ठीक समझ सकते हैं। इस पुस्तक में आर्यसमाज के इतिहास के स्वर्णिम, रजत, कांस्य और लौह युग की भी अच्छी विवेचना की गई है। अन्त में ऋषि के पत्र पर उठे विवादों का समाधान तथा ग्रन्थ की समालोचना में प्राप्त आलोचनाओं को स्थान देना तथा उसके परिप्रेक्ष्य में अपने विचारों को संशोधित करना (द्वितीय संस्करण) भी ग्रन्थकार की विशेषता है। यह प्रवृत्ति मीमांसक जी के पूरे जीवन और उनके ग्रन्थों के परवर्ती संस्करणों में भी यथोचित दिखलाई पड़ती है। किम्बहुना मीमांसक जी की इस अन्तिम कृति को आर्य जगत् और विद्वज्जगत् में बहुत ही मान प्राप्त हुआ और इसे मूल्यवान माना गया है। अल्प समय में ही इस पुस्तक का संशोधित तथा परिवर्धित द्वितीय संस्करण का प्रकाश में आ जाना इसकी महत्ता को ही उजागर करता है। प्रथम संस्करण–2048 वि.सं. (1991 ई.), पृष्ठ सं.–254 (14+240)। द्वि.सं.–2050 वि. सं. (1993 ई.), पृष्ठ सं.–404 (20+384)।

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

श्रद्धेय पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की परम्परा के प्रातः स्मरणीय विद्वान् श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक के जीवन और कार्यों पर यह शोधपूर्ण लेख डॉ. ज्वलन्त शास्त्री जी की सशक्त और खोज़ी लेखनी का अद्यतन विद्वानों और शोध छात्रों के लिए एक उपहार है। पाठक इस किंचित् लम्बे लेख से लाभान्वित हों, इस प्रयोजन से इसे धारावाहिक रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। यह लेख की सातवीं किश्त है। –सम्पादक

स्वामी दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों, विचारों, व्यक्तित्व और कर्तृत्व के तथ्यपरक परिज्ञान के लिए मीमांसक जी द्वारा सम्पादित व प्रकाशित दयानन्द–वाङ्मय का परिशीलन अपरिहार्य है, क्योंकि अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित दयानन्द–साहित्य में अनेक त्रुटियाँ विपश्चिज्जनों ने परिलक्षित की हैं। देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय तथा पं. घासीराम द्वारा लिखित–संगृहीत–सम्पादित ऋषि दयानन्द का जीवन चरित (1–2 भाग) का भी सम्यक् संशोधन पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने किया है।

{महर्षि दयानन्द का जीवन चरित, भाग–1–संशोधक का वक्तव्य, पृष्ठ– 1–2, प्रकाशक–आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड अजमेर, चतुर्थावृत्ति–2018 वि.सं.}

वेद–वेदाङ्ग विषयक विशिष्ट शोधपूर्ण लेख (संस्कृत)

1. **मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्–इत्यत्र कश्चिदभिनवो विचारः**– इस निबन्ध में इस सूत्र पर ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वथा नये रूप में विचार किया गया है–**वेदवाणी** (वाराणसी)–1952 ई.।
2. **वैदिकछन्दःसंकलनम्**–इस लेख में निदानसूत्र, उपनिदानसूत्र, पिङ्गल छन्दःशास्त्र, ऋक्प्रातिशाख्य, ऋक्सर्वानुक्रमणी आदि ग्रन्थों में वैदिक छन्दःसम्बन्धी जितने भेद–प्रभेद दर्शाये हैं, उन सबका संकलन किया गया है–**सारस्वती सुषमा** (वाराणसी) –1954 ई.।
3. **ऋग्वेदस्य ऋक्संख्या**–ऋग्वेद की ऋग्गणना सम्बन्धी मतभेदों का विवेचन–**सारस्वती सुषमा** (वाराणसी) – 1955 ई.।
4. **यजुषां शौक्ल्यकार्ष्ण्यविवेकः**–इस लेख में यजुर्वेद सम्बन्धी शुक्ल तथा कृष्ण भेदों की मीमांसा की है–**सारस्वती सुषमा** (वाराणसी) –1956 ई.।
5. **अष्टाध्याय्या अर्धजरतीया व्याख्या**–इसमें अर्वाचीन वैयाकरणों द्वारा की गई अष्टाध्यायी–व्याख्या की आलोचना की गई है–**सारस्वती सुषमा** (वाराणसी)–1960 ई.।
6. **भारतीयं भाषा–विज्ञानम्**–भाषा विज्ञान के सम्बन्ध में भारतीय मत की विवेचना परक यह शोधपत्र **संस्कृत विद्वत्सभा बड़ौदा** में अगस्त 1960 में पढ़ा गया।

गुरुकुल पत्रिका–मई, जून, जुलाई–1961 ई. के अंकों में प्रकाशित।

इसी का परिशोधित रूप लखनऊ से Ludwik sternbach filicitation volume में छपा।

7. **आदिभाषायां प्रयुज्यमानानाम् अपाणिनीयप्रयोगाणां साधुत्वविवेचनम्**–इस लेख में संस्कृत भाषा के प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में प्रयुज्यमान अपाणिनीय पदों के साधुत्व की विवेचना की गई है–**वेदवाणी** (वाराणसी) दिसम्बर 1961, जनवरी 1962 ई.।
8. **वेदानां महत्त्वं तत्प्रचारोपायाश्च**–'राजस्थान संस्कृत सम्मेलन–1966 के भीलवाड़ा (राज.) के अधिवेशन के अवसर पर 'वेदपरिषद्' के **सभापति–भाषण** के रूप में पठित तथा **गुरुकुल–पत्रिका** और **संस्कृत**–रत्नाकर में प्रकाशित–1966 ई.। पुस्तक रूप में उपलब्ध (संस्कृत तथा हिन्दी), तृतीय संस्करण 1996 ई.।
9. **संस्कृतभाषाया राष्ट्रभाषात्वम्**–यह लेख 'राजस्थान संस्कृत सम्मेलन' के भीलवाड़ा अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका 1966 ई. तथा गुरुकुल पत्रिका–अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर 1966 ई. में प्रकाशित हुआ। पुस्तक रूप में उपलब्ध (अनुवाद सहित), 1972 ई.।
10. **असाधुत्वेनाभिमतानां संस्कृत–वाङ्मये प्रयुक्तानां शब्दानां साधुत्वासाधुत्वविवेचनम्**–'अखिल भारतवर्षीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन' अक्टूबर–1966 के देहली अधिवेशन में पठित तथा गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित (अप्रैल–मई–1967 ई.)।
11. **श्रीमद्भगवद्दयानन्दसरस्वती–स्वामिनो वेदभाष्यस्य वैशिष्ट्यम्**–'आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान' की हीरक जयन्ती (नवम्बर 1966) में पठित तथा **गुरुकुल–पत्रिका** (जनवरी–फरवरी 1967 ई. में प्रकाशित।
12. **वेदसम्मेलनस्याध्यक्षीय भाषणम्**–'राजस्थान संस्कृत परिषद् के द्वितीय अधिवेशन (अजमेर–18–19 मार्च 1975) में वेद सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण, परिषद् द्वारा मुद्रापित।
13. **विलुप्तानां परः सहस्राणां संस्कृत–शब्दानां समुद्धारे अष्टाध्याय्याः साहाय्यम्–'इंटरनेशनल सेमिनार ओन पाणिनि'** (9–14 जुलाई 1981) में पूना विश्वविद्यालय के सभागार में पठित।
14. **किं यास्कीय – निर्वचनानि उन्मत्तगीतानि ?** – पंचम विश्व संस्कृत सम्मेलन (21–26 अक्टूबर 1981 ई.) के अवसर पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सभागार में पठित।
15. **वेदानां पुनः प्रसारोपायाः**–'महर्षि दयानन्द निर्वाण शती स्मृति ग्रन्थ' (अजमेर–1983 ई.) में प्रकाशित।
16. **सोमयागे वृष्टिविज्ञानम्**–'वैदिक संशोधन मण्डल' पूना द्वारा आयोजित यज्ञविचार सत्र में पठित–1985 ई.। इसका परिष्कृत रूप ***'दि अडियार लायब्रेरी बुलेटिन'*** (1986 ई.) में ***'गोल्डन जुबिली वाल्यूम'*** के अन्तर्गत प्रकाशित।
17. **पूर्वमीमांसाया रथकाराधिकरणम्**–'आचार्य उदयवीर शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित–1986 ई.।

क्रमशः

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड, अमेठी (उत्तर–प्रदेश)–227405

☞ पृष्ठ 04 का शेष

समाज के सजग ...

गुण हो। साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है जब उसमें जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हों।"

उन्होंने कहा–"जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें शक्ति और गति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य प्रेम न जागृत हो,–जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं।"

प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य को इन्हीं उच्चतर मूल्यों से सम्पृक्त किया था। उनकी श्रेष्ठ सृजनात्मकता और उच्च मानवीय मूल्यों ने उनके साहित्य को वह गरिमा प्रदान की है कि आज एक दीर्घ कालखण्ड व्यतीत हो जाने के बाद भी उनका साहित्य सतत प्रासंगिक और प्रेरक बना हुआ है,। प्रेमचंद समाज के सजग चितेरे के रूप में आज भी अत्यंत समादृत हैं।

प्राध्यापक एवम् विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

गतांक से आगे...

पं. नगजीराम शर्मा

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

डॉ. भारतीय द्वारा लिखित पुस्तक 'मैंने ऋषि दयानन्द को देखा' में से पं. नगजीराम शर्मा का वृतान्त पिछले अंक से पढ़ रहे हैं। यह दूसरी किस्त प्रस्तुत है। –सम्पादक

भाद्र कार्तिक कृष्ण 1 तदनुसार तारीख 8 अक्टूबर को गत दिन के समान ही तीन बजे राजा साहब बड़े समारोह के साथ स्वामी जी महाराज के पास पधारे। विराजने के अनन्तर कुछ समय तक वेद के विषय में वार्तालाप होने पर स्वामी जी महाराज ने राजकुमारों के पठन पाठन के विषय में पूछा तो बड़े राजकुमार अक्षयसिंह जी जिनकी अवस्था 16 वर्ष के भीतर थी उन्होंने स्वर–व्यञ्जन से ले कर वर्तमान समय पर्यन्त अपनी पढ़ाई के सब हाल कह सुनाये। जिसमें यजुर्वेद संहिता का कण्ठस्थ होना और बहुत से मन्त्रों के पद, क्रम, जटा और घन तथा सामवेद के गायन के नाम को सुन स्वामी जी महाराज बहुत प्रसन्न हुए एवं सामवेद के गायन को सुनाने के लिए कहा तो दोनों राजकुमारों ने बहुत ही उत्तमता के साथ सामगान किया, जिसको स्वामी जी महाराज ने सुनकर प्रसन्नता प्रकट की और यजुर्वेद प्रथमाध्याय के मन्त्रों को सुनने के बाद जटा तथा घन के लिए कहा तो 31 वें अध्याय के 16वें मन्त्र के जटा और घन तथा शिवसंकल्प के 6 मन्त्रों के भी जटा, घन सुनाये। जिन्हें सुनकर स्वामी जी के आनन्द का पारावार न रहा।

फिर व्याकरण और कोष के विषय में पूछा तो व्याकरण में (सारस्वतीय सन्धिविषय) और कोषों में अमर कोष के श्लोक सुनाये। इनको सुनकर स्वामी जी के मन में कुछ खेद हुआ एवं राजा साहब से कह उठे कि आप ने यह बहुत बुरा काम किया कि रत्नों को कथीर में जड़ दिया। बुद्धिमान् कुमारों को आर्ष ग्रन्थ पढ़ाने चाहिये थे जिस पर श्रीजी हुजूर ने निवेदन किया कि महाराज मैं खुद ही सारस्वत चन्द्रिका पढ़ा हुआ हूँ। इन ग्रन्थों को सरल समझ कर इन्हें ही पढ़ाना आरम्भ किया है। इस पर स्वामी जी ने अष्टाध्यायी के महत्त्व का वर्णन कर दोनों भाइयों को सन्धि–विषय, संस्कृत–वाक्यप्रबोध और वर्णोच्चारणशिक्षा की एक–एक पुस्तक दे इनके अभ्यास की आज्ञा दे एक षोडश संस्कार की पुस्तक श्री जी हुजूर के नज़र की।

तदनन्तर यहाँ साहूकार जो शरीर में बड़े लम्बे एवं पुष्ट थे वे खड़िया मिट्टी के तिलक निकाले बैठे थे। उनमें से एक ने गीता के एक श्लोक का अर्थ पूछा जिस पर स्वामी जी ने हँस कर कहा, भाई ! तुम्हारे राजा साहब के समान और गीता किसे आती होगी। तथापि मैं सुनाता हूँ सो सुनो। यह कह कर स्वामी जी ने अपनी गम्भीर ध्वनि से बहुत श्लोकों के अर्थ कह सुनाये और बोले कि यह तुम ने अपने ललाट पर श्वेत खड़िया का राम फटाका क्या लगा रखा है। यह तो गीता में न लिखा, तुम कहाँ से लाये, जिस पर उनमें से एक ने एक श्लोक में शंख–चक्र और उर्ध्व पौण्ड्र–धारण का वर्णन किया, जिस पर स्वामी जी महाराज हँसकर बोले, यदि केवल हाथों ही पर शंख–चक्र लेने से मुक्ति हो जाती हो तो अग्नि में कूद पड़ने से तत्काल मोक्ष हो जावेगा इत्यादि अनेक वाक्य कह कर उनको साम से बहुत समझाये पर उन पर कोई असर नहीं पहुँचा। सन्ध्या समय हो जाने के कारण हुजूर ने स्वामी जी महाराज से विदा ली। उस समय स्वामी जी ने सरस्वती भण्डार की पुस्तकों की सूची भेजने के लिए कहा था। अतः श्री जी हुजूर पुरोहित जी महाराज मोडीराम जी को आज्ञा देकर पधार गये।

कार्तिक कृ. 2 तदनुसार ता. 9 महीना 10 को प्रहर दिन के करीब सरस्वती भण्डार में से सूचीपत्र निकाल स्वामी जी महाराज के पास भेजी। मेरे वहाँ पर पहुँचने के समय स्वामी जी कुर्सी पर विराजमान थे। मैंने सामने जाकर प्रणाम किया एवं हाथ जोड़कर सूचीपत्र नज़र किया। मेरे त्रिपुण्ड्र तिलक देख कर स्वामी जी महाराज कुछ मुस्कराये तब मैंने निवेदन किया महाराज यह भी एक राजा की फौज की निशानी है। जिस पर फरमाया, यह कैसे ? मैंने निवेदन किया कि इस लोक के कल्याणकारी एक शिव नामक राजा का मैं सैनिक हूँ। इस पर बहुत हँस कर मेरे कन्धे पर हाथ लगा कर मुझे कुर्सी के बाईं तरफ बैठने की आज्ञा फरमाई। उस समय आत्मानन्द जी आदि एक संन्यासी और एक ब्रह्मचारी, जिनकी मुझे पूरी पूरी स्मृति नहीं है, वे पढ़ रहे थे–उसी समय से मुझ पर भी विशेष कृपा हो गई थी। सूचीपत्र को देख कर यास्क निघण्टु और सामवेद के लिए मुझे आज्ञा फरमाई। मैंने श्री जी हुजूर के हुक्म से सरस्वती भण्डार से पुस्तकें निकलवा कर नज़र कीं।

उस दिन भी हुज़ूर समारोह के साथ स्वामी जी के दर्शनार्थ पधारे। वहाँ यथायोग्य स्थान पर बैठने के बाद कल दी हुई कर्मकाण्ड की पुस्तकों को पुरोहित जी महाराज मोडीराम जी ने पढ़कर शंका की कि अपने अन्नप्राशन के समय बालकों को कामनानुकूल जीवों का मांस देना एवं नक्षत्रादिकों के लिए आहुतियाँ देना लिखाया है और आप ही मूर्ति तथा मांस भक्षण का खण्डन करते हैं, तो आपने अपनी पुस्तक में यह कैसे लिखा? क्या आपका उपदेश हाथी के खाने और दिखने के दाँतों के समान है ? इससे सुनकर स्वामी जी ने बहुत गम्भीर भाव से प्रत्युत्तर दिया जिसे सुनकर कुछ निस्तब्ध हो फिर बोलने लगे जिस पर हुज़ूर ने उनको चुप किया और दोनों राजकुमारों ने साम गायन गाया। श्री जी हुज़ूर के विदा होते समय स्वामी जी ने पण्डित बहादुर जी को फिर मिलने के लिए कहा।

कार्तिक कृ. 3 तदनुसार ता. 1 महीना 10 को प्रहर दिन बाद भोजनान्तर मैं और पं. बहादुर जी तथा उसके पुत्र गौरीशंकर जी तीनों ही स्वामी जी के पास गये, कुछ समय पर्यन्त वार्तालाप करने के बाद साम का विषय पूछा जिस पर पण्डित जी ने पुस्तक लेकर स्वामी जी को सामवेद के स्वरों की रीति सप्रमाण बतलाई। स्वामी जी महाराज ने भी कुछ मन्त्रों के स्वर पण्डित जी के संग लेकर सीखे। दूसरे दिन गायन भी सीखा। इसी दिन से पण्डित बहादुर जी नित्य जाने–आने लगे और उनके साथ पूर्ण प्रेम हो जाने के कारण उनके पुत्र गौरीशंकर जी वहीं भोजन करने लगे। स्वामी जी महाराज के चौके बर्तन का पूर्ण प्रबन्ध होने के कारण स्वामी जी के आग्रह से दो तीन वक्त पण्डित जी ने वहीं भोजन किया था।

पण्डित जी के ग्राम से आ जाने के बाद स्वामी जी ने निघण्टु मंगवा कर मेरे हाथ में राजकीय निघण्टु देकर मुझे दाहिनी ओर बैठाया और स्वामी जी ने अपना निघण्टु लेकर मिलान किया। राजकीय अति प्राचीन निघण्टु में जो शब्द विशेष थे उनको अपने निघण्टु में दर्ज किए एवं राजकीय निघण्टु में, जो शब्द कम थे तथा मात्रा आदि की क्षति थी, उसे मैंने पूरी की। यह निघण्टु अद्यावधि विद्यमान है। निघण्टु का मिलान दो दिन में पूरा हुआ। स्वामी जी ने प्रसन्न होकर मुझे अष्टाध्यायी पढ़ने के लिए कहा एवं संस्कृत वाक्यप्रबोध तथा वर्णोच्चारण–शिक्षा बख्शी। स्वामी जी महाराज का एक सप्ताह तक यहीं विराजना हुआ था। दरबारी भी 3 बजे प्रतिदिन स्वामी जी के पास जाते थे। प्रातःकाल भी 2–3 दिन तक गये थे। यहाँ लेख विशेष हो जाने के भय से तथा समय की अधिकता से विस्मृति हो जाने के कारण संक्षिप्तता से लिखा है।

स्वामी जी महाराज के शरीर का वर्णन इस प्रकार है कि ऐसी दीर्घ पुष्ट एवं भव्यमूर्ति मैंने उनके सिवाय आज तक कहीं किसी की भी नहीं देखी। मस्तक की परिधि 2।। फीट से कम न थी और गर्दन बड़ी ऊँची, मुखारविन्द गोलाई को लिये हुए लम्बा था, नेत्र विशेष बड़े नहीं थे, कर्ण एवं नासिका बड़े–बड़े थे। दोनों भुज बड़े पुष्ट और आजानु लम्बे थे। वक्षस्थल किसी वीर धनुषधारी के समान चौड़ा और दृढ़ था। शरीर अति पुष्ट होने पर भी उदर छिटका हुआ नहीं था। दोनों जाँघें बड़ी पुष्ट और 3 फीट की परिधि से कम नहीं थीं। पिण्डलियाँ भी पुष्ट एवं साफ थीं। पैर 1। फीट के करीब लम्बे होंगे। शरीर का वर्ण गोरा था। शिर के बाल श्वेत होने लगे थे। जिस समय वे घूमने निकलते मुल्तानी मिट्टी शरीर पर लगा, जोड़ पहन, एक दुशाले को शिर पे बाँध, चद्दर से शरीर को ढक, हाथ में

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

स्वामी जी महाराज के शरीर का वर्णन इस प्रकार है कि ऐसी दीर्घ पुष्ट एवं भव्यमूर्ति मैंने उनके सिवाय आज तक कहीं किसी की भी नहीं देखी। मस्तक की परिधि 2।। फीट से कम न थी और गर्दन बड़ी ऊँची, मुखारविन्द गोलाई को लिये हुए लम्बा था, नेत्र विशेष बड़े नहीं थे, कर्ण एवं नासिका बड़े–बड़े थे। दोनों भुज बड़े पुष्ट और आजानु लम्बे थे। वक्षस्थल किसी वीर धनुषधारी के समान चौड़ा और दृढ़ था। शरीर अति पुष्ट होने पर भी उदर छिटका हुआ नहीं था। दोनों जाँघें बड़ी पुष्ट और 3 फीट की परिधि से कम नहीं थीं। पिण्डलियाँ भी पुष्ट एवं साफ थीं। पैर 1। फीट के करीब लम्बे होंगे। शरीर का वर्ण गोरा था।

युगद्रष्टा ईश्वर चंद्र विद्यासागर

● डॉ. मनीषा त्रिपाठी

भारत के पुनर्जागरण में ईश्वरचंद्र विद्यासागर युगद्रष्टा के रूप में परिलक्षित होते हैं। वे स्वतंत्र चिंतक, समाज–सुधारक, प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं लेखक के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। बचपन में उन्हें **ईश्वरचंद्र बंद्योपाध्याय** के नाम से जाना जाता था। संस्कृत भाषा एवं दर्शन में उनके अद्वितीय पांडित्य के कारण विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें **'विद्यासागर'** की उपाधि से सम्मानित किया। उन्नीसवीं शताब्दी में बंगाल भारतीय नवजागरण का केंद्र था और ईश्वरचंद्र विद्यासागर इस नवजागरण के प्रमुख पथप्रदर्शक थे। उन्होंने अपनी लेखनी, चिंतन और कर्म के माध्यम से देश में नई चेतना का संचार किया।

भारतीय पुनर्जागरण का काल सामान्यतः **राजा राममोहन राय** के नेतृत्व से प्रारंभ माना जाता है। ब्रह्म समाज, आर्य समाज तथा स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस और ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे समाज–सुधारकों के प्रयासों से यह नवजागरण निरंतर विकसित हुआ। तत्कालीन भारतीय मनीषियों ने भारतीय समाज के स्वत्व को जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

इस पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप जो राजनीतिक आंदोलन विकसित हुआ, उसका स्वरूप प्रारंभ से ही दो धाराओं में विभाजित दिखाई देता है। नवजागरण एवं समाज–सुधारकों की एक धारा अंग्रेज़ी साम्राज्य को पूर्णतः अस्वीकार करती थी जबकि दूसरी धारा अंग्रेज़ी संस्थाओं एवं ज्ञान का सम्मान करते हुए केवल विदेशी प्रभुसत्ता के कारण अंग्रेज़ी शासन का विरोध करती थी।

प्रथम धारा के प्रमुख प्रवक्ता **लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महर्षि अरविंद** तथा **स्वामी दयानंद सरस्वती** थे। उनका मत था कि भारतीय ज्ञान–परंपरा पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान से श्रेष्ठ है। स्वामी दयानंद ने **"वेदों की ओर लौटो"** का आह्वान किया, जबकि लोकमान्य तिलक एवं महर्षि अरविंद **"पुनश्च हरि ओम्"** तथा **"वैदांतिक स्वराज"** की अवधारणा के समर्थक थे। लोकमान्य तिलक का प्रसिद्ध उद्घोष–**"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"**–केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का नहीं, बल्कि भारतीय स्वत्व पर आधारित राज्य–व्यवस्था की स्थापना का प्रतीक था। यहाँ **स्वत्व** से आशय भारतीयता से है, जिसका आधार मुख्यतः भारतीय, विशेषकर हिंदू, ज्ञान–परंपरा एवं दर्शन है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि **ईश्वरचंद्र विद्यासागर** दूसरी धारा के प्रमुख प्रतिनिधि विद्वानों में थे। इस धारा का प्रतिनिधित्व **दादाभाई नौरोजी** तथा **गोपालकृष्ण गोखले** जैसे महापुरुष भी करते थे। इनका मत था कि अंग्रेजी शासनकाल में विकसित संस्थागत व्यवस्था, पश्चिमी ज्ञान एवं विज्ञान भारत के विकास में सहायक हो सकते हैं इसलिए वे विदेशी शासन का विरोध करते हुए भी पश्चिमी ज्ञान, विज्ञान एवं प्रशासनिक व्यवस्था को आधुनिक मानव सभ्यता की महत्वपूर्ण उपलब्धि मानते थे। उनका उद्देश्य विदेशी अंग्रेज़ों के स्थान पर भारतीयों द्वारा संचालित आधुनिक एवं उत्तरदायी शासन व्यवस्था की स्थापना था।

वेद में कहा गया है–

"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।"

अर्थात् सभी दिशाओं से शुभ एवं कल्याणकारी विचार हमारे पास आएँ। इसका तात्पर्य यह है कि सत्य एवं उपयोगी ज्ञान विश्व के किसी भी भाग से प्राप्त हो, उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

हमारे पूर्वजों में एक तीसरी विचारधारा भी थी, जिसने न तो पश्चिम का अंधानुकरण स्वीकार किया और न ही उसके ज्ञान–विज्ञान के उज्ज्वल पक्ष का बहिष्कार किया। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना के विकास का ऐसा मार्ग प्रशस्त किया, जिसमें भारतीय परंपरा और आधुनिक ज्ञान का समन्वय था।

इस संदर्भ में कहा गया है–

"यह जो तीसरा मार्ग है, इस तीसरे मार्ग को आज तक हम उचित मानते हैं क्योंकि यही सही रास्ता है। हम यह जानते हैं कि यदि हम अपने पुराने ज्ञान–विज्ञान को आज के युग में स्वीकार करें, तो उसे युगानुकूल बनाना होगा। प्राचीन परंपरा को युगानुकूल बनाकर और विदेशों से प्राप्त ज्ञान–राशि को अपने देश की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर ही हम विकास के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं। विकास और शिक्षा दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है। यदि हम शिक्षा के क्षेत्र में पीछे रहेंगे, तो विकास के क्षेत्र में भी आगे नहीं बढ़ पाएँगे।"

ईश्वरचंद्र विद्यासागर इस तथ्य को भली–भाँति समझते थे कि उस समय देश की स्थिति अत्यंत चिंताजनक थी। देश की एक बहुत बड़ी जनसंख्या निरक्षर थी और उसके समक्ष सामाजिक एवं शैक्षिक पिछड़ापन एक गंभीर चुनौती के रूप में उपस्थित था । ऐसे समय में देश के पुनर्निर्माण का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व निभाने के लिए उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।

आधुनिक भारतीय शिक्षा की नींव रखने में ईश्वरचंद्र विद्यासागर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे मातृभाषा में शिक्षा प्रदान किए जाने के प्रबल समर्थक थे क्योंकि उनका विश्वास था कि शिक्षा तभी सार्थक होती है, जब विद्यार्थी उसे सहज रूप से समझ सके। वे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित देखना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने बंगाली भाषा में अनेक पाठ्यपुस्तकों की रचना की । बंगाली उनकी मातृभाषा थी और उनका मानना था कि मातृभाषा व्यक्ति को उसकी संस्कृति, परंपरा तथा समाज से गहराई से जोड़ती है। **'वर्ण परिचय'** उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृतियों में से एक है, जिसे बांग्ला भाषा की सर्वश्रेष्ठ प्रारंभिक पाठ्यपुस्तकों में गिना जाता है।

कहा जाता है कि बचपन में ईश्वर चन्द्र घर की आर्थिक विपन्नता के कारण सड़क के किनारे लगे लैम्पपोस्ट की रोशनी में अध्ययन करते थे क्योंकि उनके घर में दीपक जलाने के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं थे। वे भली–भाँति जानते थे कि यदि किसी घर को स्थायी रूप से प्रकाशित करना है, तो उसका एकमात्र माध्यम शिक्षा है। शिक्षा ही मनुष्य के आंतरिक और बाह्य दोनों जगत् को आलोकित करने की क्षमता रखती है।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर के व्यक्तित्व की विलक्षणता उनके बचपन और विद्यार्थी जीवन से ही परिलक्षित होने लगी थी। प्रचलित कहावत है–**"होनहार बिरवान के होत चिकने पात।"** विद्यार्थी जीवन से ही ज्ञान के प्रति उनकी गहरी आस्था और अध्ययनशीलता उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देती थी। आर्थिक अभावों के बावजूद लैम्पपोस्ट के नीचे बैठकर अध्ययन करना उनके दृढ़ संकल्प, परिश्रम और आत्मविश्वास का सशक्त प्रमाण हैं।

आगे चलकर उन्होंने बंगाल में लगभग **30–35 विद्यालयों** की स्थापना की तथा अनेक **बालिका विद्यालय** भी स्थापित किए। शिक्षा के प्रति उनके समर्पण और उल्लेखनीय योगदान के कारण उन्हें संस्कृत कॉलेज के सर्वोच्च पद **प्रधानाचार्य** के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रधानाचार्य के रूप में उन्होंने संस्कृत कॉलेज के पाठ्यक्रम में व्यापक परिवर्तन किए। उनके प्रमुख सुधारों में संस्कृत शिक्षा के साथ अंग्रेज़ी शिक्षा का समन्वय स्थापित करना विशेष रूप से उल्लेखनीय था। इसके साथ ही उन्होंने गणित और विज्ञान को भी पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। पश्चिमी दर्शन को भी उन्होंने विशेष महत्व देते हुए उसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया। इस प्रकार उन्होंने एक उदार एवं समन्वयवादी शैक्षिक नीति को अपनाया, जिसमें भारतीय परंपरा और आधुनिक ज्ञान का संतुलित समावेश था।

व्यक्ति एवं समाज के विकास में शिक्षा के महत्व को **स्वामी दयानंद सरस्वती** ने भी सर्वोपरि माना है। इस विषय में दोनों महापुरुषों के दृष्टिकोण में कुछ स्पष्ट भिन्नताएँ भी परिलक्षित होती हैं। स्वामी दयानंद ने शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति में **सत्यज्ञान** की प्राप्ति माना। सह–शिक्षा के पक्षधर नहीं थे। उन्होंने **गुरुकुल शिक्षा–पद्धति** को अनिवार्य एवं आदर्श माना। अपनी प्रसिद्ध कृति **'सत्यार्थ प्रकाश'** के तृतीय समुल्लास में उन्होंने वेदोक्त ज्ञान एवं शिक्षा के स्वरूप का विस्तृत विवेचन किया है।

यह उल्लेखनीय है कि **ईश्वरचंद्र विद्यासागर** और **स्वामी दयानंद सरस्वती,** दोनों ने ही जाति–पाँति का विरोध किया तथा स्त्री–शिक्षा पर विशेष बल दिया। दोनों का मत था कि शिक्षा ही अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों और रूढ़ियों से मुक्ति का सबसे प्रभावी साधन है। उनके विचार में शिक्षित समाज ही प्रगतिशील, न्यायपूर्ण और मानवीय समाज का निर्माण कर सकता है।

महिलाएँ परिवार, समाज तथा राष्ट्र तीनों के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए महिलाओं की शिक्षा पुरुषों की शिक्षा के समान ही आवश्यक है। शिक्षा महिला सशक्तिकरण का प्रमुख आधार है। यही उन्हें सामाजिक चुनौतियों का सामना करने, पारंपरिक रूढ़ियों को चुनौती देने तथा अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम बनाती है।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

गतांक से आगे...

कौन चैन की नींद नहीं सो सकते और उसके उपाय

● प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार

चोरम् चोर को भी प्रजागर आ घेरता है, अर्थात् उसको भी सुख–चैन से नींद नहीं आती है। जिसने चोरी कर ली है या जो चोरी करने जा रहा है, उसको सदा अपने पकड़े जाने का भय बना रहता है। यही भय फिर चिन्ता का रूप धारण करके प्रथम तो चैन से उस चोर को सोने नहीं देता और यदि वह बहुत अधिक थकान आदि के कारण सो भी जाए तो शीघ्र ही स्वप्न में भी उसे अपने निगृहीत हो जाने का भय बराबर सताता रहता है। फिर चुराए हुए धन–वैभव को कहाँ सम्भालकर रखूँ, यह चिन्ता भी बराबर उसे बनी रहती है। यदि इस प्रश्न का उत्तर उसकी अन्तरात्मा से कुछ सूझता है कि–"चलो अमुक के पास रख दूँ" तो झट पुनः उसे सन्देह होने लगता है कि कहीं वह व्यक्ति इस सब धन माल को हड़प ही न कर जाये या कहीं उसके यहाँ भी यह भेद न खुल जाए, इत्यादि नाना प्रकार की चिन्तायें उसको घेरे रहती हैं, जो उसको सुख–चैन से सोने नहीं देतीं।

चोर ने जिस भी प्रकार की चोरी की हो धन की, अन्न की, वस्त्राभूषणों की या, किन्हीं अन्य पदार्थों की, या फिर कोई काला धन्धा किया हो अथवा कहीं चोरी का विचार ही वह कर रहा हो, अथवा किसी के धन–वैभव आदि पर उसने लोभ की दृष्टि बना ली हो या किसी के भाग (हिस्से) या अधिकार पर छापा मारने का या उसको हड़प कर जाने का विचार उसके मन में उत्पन्न होता हो इत्यादि, तो ऐसे व्यक्ति को भी उन्निद्रता आ घेरती है क्योंकि इस प्रकार के कार्य या चिन्तन करने से उसके मन की शान्ति भंग हो जाती है। अशान्त मन फिर नाना प्रकार की चिन्ताओं से, भयों से, आशंकाओं से ओत–प्रोत हो जाता है, तब भला फिर वह कैसे चैन से सो सकता है? इसलिये परमेश्वर अपने को यथोचित मार्ग से जो कुछ भी प्रदान करे या न्याय के अनुसार जो कुछ भी अपने भाग्य में आए, उसी पर सन्तोष करना तथा किसी के भी धन–वैभव, जमीन–जायदाद, पुत्र–कलत्र आदि पर लोभ की दृष्टि न करना ही इस प्रकार की उन्निद्रता–उनीन्देपन के निवारण का उपाय या चिकित्सा हैं।

इस प्रकार विदुर जी ने धृतराष्ट्र को उन्निद्रता के नींद न आने के और यहाँ तक कि मखमली गद्दों पर भी सेवकों के हाथ–पैर, सिर–टांगे दबाते रहने पर भी, करवटें बदलने तथा चिन्ता के कारण नींद न आने के कारणों का उपदेश करने के उपरान्त बड़े स्पष्ट शब्दों में अन्त में निवेदन किया कि–"हे धृतराष्ट्र! जरा आप आत्मनिरीक्षण तो करके देखो कि कहीं इन छः महादोषों के शिकार तो आप नहीं हो गये हो ? इतने पर भी यदि राजा न समझा हो, तो विदुर जी ने उनके सम्मुख उनका वह महान् दोष और भी अधिक खोलकर स्पष्टरूप में रख दिया–"राजन्! ज़रा विचार तो करो कि कहीं दूसरे के धन–वैभव पर, दूसरों की ज़मीन–जायदाद पर, दूसरों के वास्तविक स्वत्व पर, वास्तविक अधिकार पर आप लोभ की वृत्ति बनाए रख कर तो परितप्त नहीं हो रहे हो?"

धृतराष्ट्र ने अपनी उन्निद्रता की–अपने उनीन्देपन की यह समस्या विदुर जी के सम्मुख आज से लगभग पाँच सहस्र वर्ष पूर्व रखी थी और महान् विदुर जी ने उसके उन्निद्रता रूप रोग का निदान प्रस्तुत कर उसकी चिकित्सा का सुन्दर उपाय भी उसे सुझाया था परन्तु उस महान् विदुर से अपने रोग के मूल कारण को पहचान कर भी उनके वचनानुसार उसने अपनी चिकित्सा के उपाय न अपनाये। अतः परिणाम में वह सतत दुर्गति और अपयश को ही प्राप्त होता रहा। केवल उसी समय तक उसकी अपकीर्ति रही हो, ऐसी बात नहीं, बल्कि आज तक भी समाज उसको उसके कार्यों के लिये कोसता चला आ रहा है।

जो प्रश्न विदुर जी ने धृतराष्ट्र से अन्त में किया था कि–"हे धृतराष्ट्र कहीं तुम इन छः महादोषों के ग्रास तो नहीं बन गए हो, या कहीं दूसरों के धन–वैभव पर लोभ से अभिभूत होकर तो तुम सन्तप्त नहीं हो रहे हो ?" यह प्रश्न यदि हम अपने आप से करें तो मुझे विश्वास है कि हमें अपनी उन्निद्रता–उनीन्देपन के कारणों का पता लग जायेगा और तदनुरूप अपनी चिकित्सा करने या किसी अनुभवी महापुरुष से कराने पर निःसन्देह हम चैन की, सुख की नींद सो सकने के अधिकारी बन सकेंगे।

वैसे आजकल उन्निद्रता के निवारण करने के लिये बहुत से वैज्ञानिक उपायों का भी आविष्कार हो चुका है और उनके अनुसार आराम से नींद भी आ सकती है तथा सुख चैन से रात्रि व्यतीत भी हो जाती है। कई महानुभाव मदिरा आदि मादक द्रव्य या अन्य पदार्थ खा पीकर अपने आपको मदहोश कर के भी चैन से नींद लेने का प्रयत्न करते हैं परन्तु इस प्रकार नींद की गोलियों के सेवन करने से या शराब आदि के पीने से केवल उसी रात को नींद आ जाती है या बेहोशी में चिन्ताओं से कुछ काल के लिये तो मनुष्य को मुक्ति मिल सकती है, पर सदा के लिये नहीं। प्रथम तो यह क्षणिक उपाय है इनसे रोग की निवृत्ति तो नहीं होती, केवल कुछ समय के लिये उस पर परदा सा पड़ जाता है। परन्तु जहाँ होश आई या नींद खुली कि फिर वही हाल हो जाता है। इसके अतिरिक्त इन गोलियों आदि के निरन्तर सेवन करते रहने से या मदिरा आदि–आदि मादक द्रव्यों के पान करने आदि से शरीर को बहुत बड़ी हानि पहुँचती है। साथ में पहले रोग की निवृत्ति तो होती नहीं, उलटा कुछ दिनों में एक नया रोग और गले पड़ जाता है। वह है मदिरा पान और नशे की गोलियों का सेवन करने आदि का दुष्परिणाम। अतः ये सब वास्तविक उपाय नहीं है, क्योंकि इनसे उन्निद्रता के कारण वैसे के वैसे वर्तमान रहते हैं, तभी तो जागने पर अथवा होश में आने पर वे कारण पुनः उस व्यक्ति को व्यथित करने लगते हैं इसलिये उचित उपाय तो उन्निद्रता के उनीन्देपन के मूल कारणों को दूर करना ही है और ऐसा करने पर ही जहाँ हम चैन की नींद सो सकते हैं, वहाँ हम अपने मन को सुन्दर अवस्था में रख कर दिन में भी अव्यथित ही नहीं, अपितु मुदित अवस्था में भी रख सकते हैं।

दोनों उपाय हमारे सम्मुख हैं। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम सुख–चैन की नींद सोने के लिये कौन से उपाय को अपनाते हैं, जैसा उपाय हम अपनायेंगे, वैसा ही फल भी हम पायेंगे।

(लेखक की पुस्तक)
'महान् विदुर के महान् उपदेश'
से साभार

☞ पृष्ठ 06 का शेष

पं. नगजीराम शर्मा

लट्ठ और कमण्डल लिये स्वयम् एकाकी ही घूमने निकलते थे। उस समय जंगल में यदि किसी अज्ञात पुरुष को अचानक दृष्टिगोचर होते तो वह इन को मनुष्य नहीं देव विशेष की मूर्ति मान चकित हो कर मार्ग को छोड़ एक तरफ खड़ा हो जाता। दर्शन कर बतलाने पर निर्भय हो प्रसन्न होता। आपका घूमना 3 मील से कभी कम नहीं होता था। एक दिन मुझे व मेरे मित्र गौरीशंकर जी को स्वामी जी के साथ घूमने जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ किन्तु स्वामी जी के धीमे–धीमे चलने पर भी हम दोनों उनके साथ नहीं निभ सके। अतएव 400–500 गज के फ़ासले से ही वापस लौट आये।

आपके यहाँ से पधारने के एक दिन पहले राजा साहब के अत्यन्त आग्रह करने पर बग्गी में विराजमान हो दुर्ग में पधारे और वहाँ रंग महल में विराजमान हुए। दुर्ग का निरीक्षण कर बहुत प्रसन्नता प्रकट की। आने–जाने के समय उन मनोहर मूर्ति को देख–देख जनता अत्यन्त ही चकित हुई। बहुत से मतवादियों ने निन्दा करते हुए भी शरीर एवं विद्वत्ता की तो प्रशंसा ही की। स्वामी जी वहाँ से सत्कार पा कर सीधे चित्तौड़ पधारे।

चित्तौड़ में वायसराय के पधारने की तैयारियाँ हो रही थीं अतएव महाराणा साहब सज्जनसिंह जी और मेवाड़ के सब सरदार वहीं उपस्थित थे। उस समय स्वामी जी के वेद के सारगर्भित धर्मोपदेश तथा बड़े प्रभावशाली व्याख्यानों का महाराणा जी के मन पर ऐसा प्रभाव उत्पन्न हुआ कि वे तथा उनके बड़े–बड़े सामन्त स्वामी जी के शिष्य बन गये और महाराणा जी के संग सच्छास्त्रों के पारगामी होने का घमण्ड रखने वाले कई विद्वान् विद्यमान थे परञ्च सूर्य भगवान् के सामने चन्द्रमा की चन्द्रिका के समान उन सब विद्वानों की सद्बुद्धि उन महात्मा के सामने अस्त प्रायः सी हो गई। केवल एक सुब्रह्मण्य शास्त्री तैलङ्ग ने ही न्याय के विषय में स्वामी जी से उत्तमता के साथ शास्त्रार्थ किया और अन्य विषयों में परास्त हो गए तथा स्वामी जी उससे प्रसन्न ही रहे।

उक्त शुभागमन के समय पर मेवाड़ के साम्राज्य के नियमानुसार अन्य सामन्तों के समान बनेड़े से भी अपने कनिष्ठ भ्राता रामसिंह जी कर सहित राजकुमार अक्षयसिंह जी जो वर्तमान् राजाधिराज अमरसिंह जी के पिता थे–वे समारोह के साथ चित्तौड़ गढ़ पधारे और वहाँ भी स्वामी जी के

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

☞ पृष्ठ 06 का शेष

युग द्रष्टा ईश्वर ...

स्त्री–शिक्षा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधाएँ **बाल–विवाह** और **अनमेल विवाह** जैसी कुप्रथाएँ थीं । ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने इन सामाजिक कुरीतियों का सशक्त विरोध किया तथा स्त्री–पुरुष समानता पर विशेष बल दिया। उन्होंने विधवा–विवाह का भी दृढ़ समर्थन किया। विधवाओं के सशक्तिकरण के उद्देश्य से उन्होंने विधवा–विवाह के समर्थन में शास्त्रीय प्रमाण एकत्रित करने का कार्य प्रारंभ किया । गहन अध्ययन के उपरांत उन्होंने ऐसे अनेक संस्कृत श्लोकों का उल्लेख किया, जो शास्त्रसम्मत दृष्टि से विधवा–विवाह का समर्थन करते थे । इन प्रमाणों का उन्होंने व्यापक प्रचार–प्रसार किया, जिससे हिंदू समाज में इस विषय पर नई चेतना का विकास हुआ।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बालिकाओं के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की। उनसे न तो किसी प्रकार की फीस ली जाती थी और न ही उन्हें पाठ्यपुस्तकें खरीदने की आवश्यकता होती थी। जब तक सरकार की ओर से कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हुई, तब तक विद्यालयों का समस्त व्यय तथा शिक्षकों का वेतन वे स्वयं वहन करते रहे। यह उनके शिक्षा–समर्पण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय संवेदनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

संस्कृत कॉलेज के प्रधानाचार्य के रूप में कार्य करते हुए विद्यासागर ने अनेक व्यापक एवं दूरगामी सुधार किए। वे भारतीय और पाश्चात्य शिक्षा–पद्धतियों के समन्वय के पक्षधर थे। इसी दृष्टि से उन्होंने पाठ्यक्रम को अधिक आधुनिक, व्यावहारिक और समयानुकूल बनाया। उन्होंने संस्कृत कॉलेज में गैर–ब्राह्मण विद्यार्थियों के लिए भी प्रवेश के द्वार खोल दिए, जो उस समय की सामाजिक परिस्थितियों में अत्यंत क्रांतिकारी कदम था। उनके इन प्रयासों ने शिक्षा को अधिक समावेशी, लोकतांत्रिक तथा सामाजिक न्याय के अनुरूप बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस संदर्भ में कहा गया है–

"हमें विचार करना चाहिए कि हम अपने देश की परंपरा से जुड़े रहकर कैसे आधुनिक बन सकते हैं? हम अपनी उस वैदिक उक्ति को कैसे चरितार्थ कर सकते हैं कि विश्वविद्यालय का अर्थ है 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्', अर्थात् जहाँ समस्त विश्व एक ही नीड़ (घोंसले) के समान हो जाए। जहाँ विश्वभर के विद्वान् एकत्रित हो सकें और जिसकी दृष्टि क्षेत्रीय या संकीर्ण न होकर समस्त विश्व को समाहित करने वाली हो। विश्व–मानवता को स्वीकार करते हुए हमें अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए। इसी दिशा में हमें निरंतर अग्रसर होना चाहिए।"

ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने इस विचार को बहुत पहले ही समझ लिया था और अपने शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यों के माध्यम से उसे व्यवहार में भी उतारा। उन्होंने भारतीय परंपरा और आधुनिक शिक्षा के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि किसी भी राष्ट्र का विकास तभी संभव है, जब वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा रहे और साथ ही आधुनिक ज्ञान–विज्ञान को भी विवेकपूर्ण ढंग से आत्मसात करे।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर का संपूर्ण दर्शन **मानवतावाद** पर आधारित था। भारत की एक विशिष्ट विशेषता यह रही है कि उसने विभिन्न मानवीय तथा सांस्कृतिक धाराओं को अपने भीतर समाहित किया है। पाश्चात्य एवं भारतीय जीवन–दर्शन, व्यवहार तथा तत्त्वज्ञान के मध्य समय–समय पर वैचारिक मतभेद और संघर्ष की स्थिति अवश्य रही है, किंतु भारतीय संस्कृति ने सदैव समन्वय की भावना को प्राथमिकता दी है।

मानवतावादी दर्शन आधुनिक भारत की एक प्रखर वैचारिक धारा का प्रतिनिधित्व करता है जो भारत को उसकी सांस्कृतिक पहचान के साथ आधुनिक बनाना चाहती है, किंतु उसे पश्चिम की मात्र प्रतिकृति नहीं बनने देना चाहती। यह ज्ञान–विज्ञान के उत्कर्ष का समर्थन करती है, परंतु आध्यात्मिक मूल्यों की उपेक्षा नहीं करती।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर पश्चिम का अधानुकरण नहीं करते थे। वे मानवीय सभ्यता के सभी सकारात्मक एवं उपयोगी प्रयासों का सम्मान करते थे तथा आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप उनका विवेकपूर्ण उपयोग करने के पक्षधर थे। उनके अनुसार किसी विचार या व्यवस्था को केवल इसलिए स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए कि वह पाश्चात्य है, बल्कि उसका मूल्यांकन इस आधार पर होना चाहिए कि वह मानव मूल्यों, सामाजिक न्याय और लोककल्याण की कितनी उन्नति करती है।

इसी संदर्भ में कहा गया है–

"विश्व का ज्ञान हमारी थाती है। मानव जाति का अनुभव हमारी संपत्ति है। विज्ञान किसी देश विशेष की बपौती नहीं है, वह हमारे भी अभ्युदय का साधन बनेगा।"

यद्यपि मानवतावाद की अवधारणा का व्यवस्थित विकास मुख्यतः पाश्चात्य चिंतन में हुआ, तथापि ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने इसे भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि के अनुरूप ग्रहण किया। वे पश्चिम की प्रगति के **परिणामों** की नकल करने के पक्षधर नहीं थे, बल्कि उन कारणों को समझने और उनसे सीखने पर बल देते थे, जिनके कारण पश्चिम ने प्रगति की। उनका विश्वास था कि **यदि भारत उन मूल कारणों को समझकर अपनी परिस्थितियों के अनुरूप अपनाए, तो वह अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक विकास की दिशा में अग्रसर हो सकता है।**

वस्तुतः ईश्वरचंद्र विद्यासागर के विचारों में धर्म और परंपरा का महत्व स्वीकार किया गया है, किंतु उन्होंने मनुष्य के कल्याण को सर्वोपरि माना। उनके लिए किसी भी सामाजिक व्यवस्था का अंतिम उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास, समानता और सम्मान था इसलिए उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे सामाजिक परिवर्तन, मानव मुक्ति और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना का सर्वाधिक प्रभावी साधन स्वीकार किया।

उन्होंने शिक्षा के माध्यम से मानवता, समानता, सामाजिक न्याय और नैतिक मूल्यों की स्थापना को अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य बनाया तथा जीवनपर्यंत इसी दिशा में कार्य करते रहे। उनके समस्त सामाजिक, शैक्षिक और वैचारिक प्रयासों का मूल लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण था जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा, सम्मान, समान अवसर तथा मानवीय गरिमा प्राप्त हो ।

इस प्रकार ईश्वरचंद्र विद्यासागर का शिक्षा दर्शन केवल ज्ञान के प्रसार तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सामाजिक पुनर्निर्माण, स्त्री–सशक्तिकरण, जातीय समानता, मानवीय मूल्यों और आधुनिक राष्ट्र–निर्माण की व्यापक अवधारणा से जुड़ा हुआ था। भारतीय नवजागरण के प्रमुख पुरोधाओं में उनका स्थान इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उन्होंने भारतीय परंपरा और आधुनिक चेतना के मध्य संतुलित समन्वय स्थापित करते हुए शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी साधन सिद्ध किया। आज भी उनके विचार समानता, मानवता, सामाजिक न्याय और समावेशी शिक्षा की दिशा में प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

संदर्भ :

1. भारतीय पुनर्जागरण, डॉ महेश चंद्र शर्मा, पृ. 300
2. शिक्षा का भारतीय आदर्श, व्याख्यान, विष्णुकान्त शास्त्री, डॉ प्रेमशंकर त्रिपाठी पृ–126
3. वही पृ 126
4. भारतीय जनसंघः घोषणा प्रस्ताव भाग–10 डॉ महेश चंद्र शर्मा पृ. 359.

प्राध्यापक, विद्यासागर कॉलेज, कोलकात्ता

☞ पृष्ठ 08 का शेष

पं. नगजीराम शर्मा

डेरे पर दर्शनार्थ गये तो स्वामी जी महाराज ने बहुत आदर के साथ उन्हीं से सामगायन, यजुर्वेद पाठ और जटा, घनादि श्रवण कर बहुत ही प्रसन्नता प्रकट की। इतना ही नहीं स्वामी जी महाराज ने महाराणा साहब के सामने विद्या और प्रजापालन तथा राजनीति के विषय में बनेड़ाधीश जी की बहुत ही प्रशंसा की थी किन्तु दोनों राजकुमारों के विषय में फरमाया कि इनके बराबर राजपूताने भर में वेद के पाठी कहीं भी नहीं देखे, जिस पर दूसरे दिन महाराणा साहब ने स्वामी जी महाराज और दोनों राजकुमारों को बुलाया और उनकी परीक्षा के लिए राज्य परम्परा से जो वेदपाठी 4 (चार) पण्डित नियत हैं उनको भी बुलवा के दोनों राजकुमारों का पाठ सुना तो उन पण्डितों ने भी प्रशंसा की किन्तु महाराणा साहब तो सामगायन सुनते ही हर्ष में मग्न रह गये और स्वामी जी महाराज से कहा कि यदि आप न फरमाते तो मुझे ऐसा सुअवसर कब प्राप्त होता? सब के रवाना होने के अनन्तर अक्षयसिंह जी को बहुत प्यार किया और उसी समय अपने मन में इनको अपना उत्तराधिकारी नियत करने का निश्चय कर लिया। इति।

परञ्च अन्य वृत्तान्तों को अनावश्यक मानकर यहाँ उद्धृत न किया और मेरे विद्यागुरु पुरोहित मोडीराम जी महाराज राजकुमारों के संग होने से मुझे भी स्वामी जी महाराज के फिर दर्शन करने का और उक्त वृत्तान्त नेत्र द्वारा तथा श्रवण द्वारा प्रत्यक्ष करने का अलभ्य लाभ हआ।

'मैने ऋषि दयानन्द को देखा' पुस्तक से साभार

पत्र/कविता

कारगिल की वो शाम ...

था बहादुर वो चरवाहा,
जिसने दिया था सेना को संदेश,
जाग उठा था पूरा देश
द्रास, बटालिक, टाइगर हिल को
घुसपैठ से खाली कराना था।
सियाचिन ग्लेशियर पर
अपना तिरंगा फहराना था।

देश में जुनून था,
हर जगह खून था
कारगिल ! कारगिल
हर जुबाँ पर नाम था।

लड़ रहे थे साँस छोड़
घर की आस छोड़
छूट गई घर में मुनिया,
हम तो छोड़ गए थे दुनिया.....

इंतजार में थी पत्नी
आएँगे मिलकर करेंगे बातें.....
बेटी के लिए लाएँगे सौगातें...
वो आए...
तिरंगे में लिपटे आए।
हम कुछ कह पाए.....
नाही व हमको सुन पाए...
सीने पर उनके लगा था चक्र....
कैसा है ? समय का कुचक्र...
माँ की एक ही पुकार थी.....
सरहद पर जीत की हुँकार थी
हम जीत गए ..... हम जीत गए
छब्बीस जुलाई का सूरज
बन गया गवाह था।
विरोधियों का घर अब पूरा तबाह था।
थी उम्र उन्नीस वर्ष योगेन्द्र की
दुश्मन के छक्के छुड़ाए थे.....
टाइगर हिल पर वो तिरंगा फहराए थे
ऑपरेशन सफेद सागर ने
दुश्मन को निशाना बनाया था ....
उनके ही घर में उनको
खूब मार गिराया था।

ऑपरेशन विजय ने
सियाचिन ग्लेशियर पर
अपना प्यारा तिरंगा फहराया था।

अनूप कुमार पाठक
गया, बिहार

कारगिल युद्ध का हीरो अमर शहीद कैप्टन सौरभ कालिया

अमर शहीद कैप्टन सौरभ कालिया का जन्म 29 जून 1976 को अमृतसर में हुआ था। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा से कक्षा 10वीं कक्षा तक की पढ़ाई पालमपुर (हि.प्र.) स्थित डी. ए.वी. पब्लिक स्कूल, पालमपुर (हि.प्र.) से की। इसके बाद केंद्रीय विद्यालय, पालमपुर से +1 और +2 की पढ़ाई पूरी की। 1997 में पालमपुर की हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। ये पढ़ाई में बहुत होनहार थे, हमेशा प्रथम श्रेणी हासिल की और लगातार छात्रवृत्ति भी अर्जित की। इनकी लंबाई 6 फीट 2 इंच थी।

उन्हें प्रकृति से लगाव था और पक्षियों को देखना व ट्रेकिंग करना उनके पसंदीदा शौक थे, साथ ही वे खाना पकाने में भी माहिर थे। वे दृढ़ इच्छाशक्ति वाले, शांत स्वभाव के, मृदुभाषी और बहुत अच्छे श्रोता थे। वे धार्मिक और दयालु तथा हमेशा दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहते थे। वे दूसरों की नकारात्मक टिप्पणियों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देते थे और न ही अपना समय या ऊर्जा बर्बाद करते थे, बल्कि हमेशा खुद को बेहतर बनाने में लगे रहते थे।

अगस्त 1997 में ***'कंबाइंड डिफेंस सर्विसेज'***, के माध्यम से देहरादून स्थित ***'इंडियन मिलिट्री एकेडमी'*** के लिए चुने गए और 12 दिसंबर 1998 को कमीशन प्राप्त किया (IC No. 58522)। उन्हें कारगिल सेक्टर में 4 जाट रेजिमेंट (इन्फैंट्री) में पोस्टिंग मिली। 31 दिसंबर 1998 को, जाट रेजिमेंटल सेंटर, बरेली में रिपोर्ट करने के बाद, जनवरी 1999 के मध्य में कारगिल सेक्टर में शामिल हुए।

मई 1999 के पहले पखवाड़े में, कारगिल के अलग–अलग इलाकों में तीन बार पेट्रोलिंग ड्यूटी पर गए। कारगिल में पाक सेना की बड़े पैमाने पर घुसपैठ की विस्तृत जानकारी देने वाले पहले अधिकारी के तौर पर पहचाने गए। काक्सर इलाके में घुसपैठ की जांच के लिए 13,000–14,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित बजरंग पोस्ट पर जाने के लिए, एक थोड़े वरिष्ठ अधिकारी की जगह खुद चौथी बार स्वेच्छा से आगे गए। वहाँ पाक सेना ने उन पर गोलीबारी की, और ये बहादुर सैनिक कुछ समय तक लड़ते रहे (पाक सैनिकों के साथ लड़ाई में वे घायल भी हो सकते थे), गोला–बारूद खत्म हो गया और सिग्नल उपकरण खराब हो गए। आखिरकार, मदद के वहाँ पहुँचने से पहले ही पाक सैनिकों ने उन्हें जिंदा पकड़ लिया। पाक सेना ने 15 मई 1999 को उन्हें और उनके 5 बहादुर सैनिकों की पेट्रोलिंग पार्टी को जिंदा पकड़ लिया। वे बाईस दिनों से भी ज्यादा समय तक उनकी कैद में रहे और उनको अकल्पनीय बर्बर यातनाएँ दी गई, जैसा कि 9 जून 1999 को पाकिस्तान सेना द्वारा सौंपे गए उनके शव से पता चला।

इतनी असीम बर्बरता सहने के बावजूद भी ये सैनिक टूटे नहीं। यह उनकी देशभक्ति, हिम्मत, दृढ़ संकल्प, अटूट साहस और वीरता को बखूबी दर्शाता है।

पाकिस्तानी सेना ने उन्हें गोली मारने से पहले सिगरेट से उनके शरीर को जलाने, आँखें निकालने और ज्यादातर दाँत व हड्डियाँ तोड़ने जैसी बेहद बेरहम हरकतें कीं, साथ ही उन्हें हर तरह की शारीरिक और मानसिक यातनाएँ दीं। पाकिस्तान ने यह मिसाल पेश की कि इंसानियत किस हद तक शर्मसार हो सकती है।

पाकिस्तान ने उन्हें जिंदा पकड़कर सभी अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन किया, लेकिन भारतीय अधिकारियों को उनके युद्धबंदी होने की जानकारी नहीं दी। पाकिस्तानी सेना ने उन पर ऐसी बेमिसाल और बेरहम यातनाएँ ढाहीं जो ***'जिनेवा कन्वेंशन'*** का उल्लंघन करती थीं। न्याय की माँग करने वाली एक याचिका भारत के *सुप्रीम कोर्ट और इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस* में प्रार्थनीय है। इतने सालों तक मीडिया – प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक दोनों, और पूरे देश ने इस मुद्दे का समर्थन किया है।

उन्होंने असल में 22 दिनों तक कारगिल की लड़ाई लड़ी, वह भी दुश्मन की हिरासत में बिना किसी हथियार के। उनके इस अनोखे तरीके से मिली उनकी अद्वितीय शहादत ने पूरे सोए हुए देश को जगा दिया, देश में देशभक्ति की आग जलाई और पूरी सेना पर एक उत्प्रेरक प्रभाव डाला।

उनके माता पिता को उन्हें कभी भी वर्दी में देखने को सौभाग्य नहीं मिला। बैंक खाते में उनकी पहली सैलरी आने से पहले ही, वे शहीद हो गए। किस्मत ने भगवान बजरंग बली (हुनमान जी) के इस बड़े भक्त के साथ एक निर्दयी मजाक किया, इत्तेफ़ाक से वे 'बजरंग पोस्ट' पर पकड़े गए और 'ऑपरेशन विजय' में अपनी जान दे दी, वैसे उनकी माँ का नाम भी विजय कालिया है। कारगिल जाने से पहले इस बहादुर सैनिक ने अपनी माँ से अखिरी शब्द कहे थे : "माँ, तुम देखना एक दिन ऐसा काम कर जाऊँगा कि सारी दुनिया में मेरा नाम होगा"। बहुत से लोगों ने उन्हें प्यार से कारगिल युद्ध का 'अभिमन्यु' नाम से अलंकृत किया हुआ है। **पूरा देश मातृभमि के इस सूपत को सलाम करता है।**

1. उनके घर में **'सौरभस्मृति कक्ष'** (एक म्यूज़ियम) बनाया गया है।
2. भारत सरकार ने उन्हें एल.पी.जी डिस्ट्रीब्यूटरशिप देकर सम्मानित किया।
3. हिमाचल प्रदेश सरकार ने सम्मान के तौर पर, शानदार धौलाधार रेंज की खूबसूरत तलहटी में, पालमपुर (हि.प्र.) में 35 एकड़ के बड़े इलाके में **'सौरभ वन विहार'** बनाया है।
4. डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. पूनम सूरी, (पद्म श्री अवार्डी) द्वारा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पालमपुर (हि.प्र.) में उनके सम्मान में एक नये ब्लॉक का नाम उनके नाम पर रखा गया है।

अंग्रेज़ में लेख इंटरनैट से प्राप्त
अनुवादकर्ता : श्री विनय कुमार यादव
प्राचार्य, डी.ए.वी. पालमपुर (हि.प्र.)

डी.ए.वी. कोयला नगर धनबाद में 51 कुण्डीय महायज्ञ

आर्य युवा समाज के तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोयला नगर में 51 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन हुआ। इस अनुष्ठान का मुख्य उद्देश्य युवाओं में बढ़ती नशे की लत के प्रति समाज को जागरूक करना था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक (HR) श्री मुरली कृष्ण रमैया रहे। ब्रिगेडियर अशोक कुमार अधलखा, मानद कोषाध्यक्ष, डीएवी प्रबन्धक समिति ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री एम. के. सिन्हा, प्राचार्या श्रीमती डोलन चम्पा बनर्जी सहित 500 से भी अधिक छात्रों, 200 शिक्षकों और प्राचार्यों ने इस यज्ञ में हिस्सा लिया।

ब्रि. श्री अधलखा जी ने कहा 'जन–जन का एक ही नारा, नशा मुक्त हो प्रदेश हमारा' के संकल्प से जन जागृति का उद्गार अवतरित हुआ। उन्होंने नशा मुक्ति के सपने को सार्थक करने का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि ने कहा कि डीएवी संस्थान बच्चों के चरित्र निर्माण के प्रति संकल्पित है।

श्री एम. के. सिन्हा सहायक क्षेत्रिय अधिकारी ने कहा कि लगभग 151 वर्ष पूर्व महर्षि दयानंद सरस्वती ने समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वासों, एवं धार्मिक पाखंड के खिलाफ एक महान क्रांति का शुभारंभ किया गया। आज आदरणीय योगी सूरी जी के नेतृत्व में 'नो नशा नेशन' के तहत समाज को नशा मुक्त करने आहवान ऋषि के सपनों को पूरा करने का प्रयास है।

प्राचार्या श्रीमती डोलन चम्पा बनर्जी ने बढ़ती नशे की लत की गंभीरता को देखते हुए हमें अब अपने बच्चों और युवाओं को सख्ती से नशा मुक्त भारत के सपने को साकार करने के प्रति संकल्पित करना है।

डी.ए.वी. सेक्टर-15-ए चण्डीगढ़ में वनमहोत्सव

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सेक्टर–15ए, चण्डीगढ़ के 'सम्पदा ईको क्लब' तथा आर्य युवा समाज के संयुक्त तत्वावधान में वनमहोत्सव बड़े उत्साह, उल्लास एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक परम्परा के अनुरूप वनवर्द्धन यज्ञ से हुआ। सर्वप्रथम विद्यार्थियों ने धर्माचार्य रमेश शास्त्री के मार्गदर्शन में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ में सहभागिता की। यज्ञ के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा पर्यावरण शुद्धि, वृक्षों के महत्व तथा प्रकृति संरक्षण हेतु आहुतियाँ डाली गईं।

वनमहोत्सव के अंतर्गत वृक्षारोपण अभियान, प्रकृति भ्रमण (Nature Walk), *'हग अ ट्री'* अभियान, प्रकृति संरक्षण की शपथ (Nature Pledge), पोस्टर निर्माण, स्लोगन लेखन तथा ईको– आर्ट जैसी गतिविधियाँ सम्पन्न कराई गईं।

विद्यार्थियों ने अत्यन्त उत्साह एवं उमंग के साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी जागरूकता, सृजनात्मकता एवं उत्तरदायित्व का परिचय दिया।

प्राचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा ने कहा, "आज लगाया गया प्रत्येक पौधा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है। हम सभी का कर्तव्य है कि हम अधिकाधिक वृक्ष लगाएँ, उनकी नियमित देखभाल करें तथा दूसरों को भी पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करें।"

कार्यक्रम के समापन पर सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने अधिकाधिक वृक्षारोपण, उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण तथा स्वच्छ, हरित एवं प्रदूषण–मुक्त वातावरण के निर्माण में सक्रिय योगदान देने का सामूहिक संकल्प लिया।

डी.ए.वी. पुष्पांजलि, दिल्ली में वृक्षारोपण

डी.ए.वी. पुष्पांजलि, दिल्ली में आर्य युवा समाज एवं इको क्लब के संयुक्त तत्वावधान में 'वृक्षारोपण कार्यक्रम' का आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रधानाचार्या श्रीमती रश्मिराज बिस्वाल ने नीम का पौधा रोपित कर किया। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षकगण, इको क्लब के सदस्य तथा विभिन्न कक्षाओं के छात्र–छात्राओं ने भी उत्साहपूर्वक पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया।

प्रधानाचार्या ने कहा कि वृक्ष पृथ्वी के प्राण हैं। वे केवल शुद्ध वायु, छाया, फल एवं औषधियाँ ही नहीं प्रदान करते, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के जीवन–चक्र को संतुलित रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि प्रतिवर्ष वृक्ष लगाना और उनका संरक्षण करना केवल एक अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का स्वाभाविक संस्कार बनना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आज हम सभी बढ़ती गर्मी, अनियमित वर्षा, प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का अनुभव कर रहे हैं। महानगरीय विकास और अंधाधुंध वृक्षों की कटाई ने प्रकृति के संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। यदि हम आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित एवं हरित भविष्य देना चाहते हैं, तो अधिकाधिक वृक्षारोपण करना। प्रत्येक पौधे की देखभाल प्रेम, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व के साथ करनी चाहिए।

प्रधानाचार्या ने आह्वान किया कि यदि पर्याप्त स्थान उपलब्ध न हो तो घरों की छत, बालकनी अथवा गमलों में भी पौधे लगाकर उनका नियमित संरक्षण करें।

कार्यक्रम का समापन पर्यावरण संरक्षण एवं हरित भारत के निर्माण का सामूहिक संकल्प लेने के साथ हुआ।

आर्य समाज 150 मानव सेवा के स्वर्णिम वर्ष 1875 – 2025

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2026

डी.ए.वी. सैक्टर-49, गुरुग्राम में वार्षिकोत्सव

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, उप्पल साउथ एंड, सेक्टर–49, गुरुग्राम में आयोजित वार्षिकोत्सव 2026 'मैरी पॉपिन्स : द म्यूजिकल ब्रॉडवे' के अवसर पर कला, संस्कृति, संगीत और सृजनात्मकता के अनुपम संगम का साक्षी बना।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में 'आर्य युवा समाज' के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री योगी सूरी जी आमंत्रित थे। साथ ही डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के उपाध्यक्ष श्री योगेश मुंजाल जी, सहित एलएमसी के सदस्यों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

कार्यक्रम का शुभारंभ डी.ए.वी. गान की मधुर प्रस्तुति एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। *'सिम्फनी : द मेलोडियस रिद्म'* ने वातावरण को सुरमय बना दिया। शास्त्रीय नृत्य–प्रस्तुति 'दिव्यांजलि' ने विद्यालय की निरंतर उन्नति एवं समृद्धि हेतु मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं।

वार्षिक प्रतिवेदन के माध्यम से विद्यालय की वर्षभर की उल्लेखनीय उपलब्धियों का प्रभावशाली विवरण प्रस्तुत किया गया। इसमें विद्यालय की समग्र एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त किया गया।

सह–शैक्षिक गतिविधियों में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ अर्जित करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण ***'मैरी पॉपिन्स : द म्यूजिकल ब्रॉडवे'*** रहा। यह संगीतमय प्रस्तुति केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं थी, बल्कि आत्मपरिवर्तन और व्यक्तित्व विकास की प्रेरणादायी यात्रा थी।

माननीय मुख्य अतिथि श्री योगी सूरी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं विद्यालय प्रशासन के समर्पण और उत्कृष्ट प्रयासों की सराहना की। उन्होंने उल्लेखनीय कार्यों की प्रशंसा करते हुए विद्यार्थियों को ईमानदारी, समर्पण एवं निरंतर सीखने की भावना के साथ अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया।

डी.ए.वी. श्रेष्ठ विहार में इंद्रा एम.यू.एन.

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार में आयोजित डीएवी इंद्रा एम.यू.एन. 2026 का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन, मंत्रोच्चार और डीएवी गान के साथ हुआ।

इस अवसर पर डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष डॉ. एन. के. ओबेरॉय मुख्य अतिथि रहे। उनके साथ स्थानीय प्रबंध समिति के सदस्य श्री रामबीर बंसल तथा श्री एन.के. मुद्गल और अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

श्री एन. के. ओबेरॉय ने कहा कि वे स्वयं को आज भी सीखने वाला विद्यार्थी मानते हैं और सीखने की प्रक्रिया जीवनभर चलती रहती है। उन्होंने अपने डी.ए.वी. विद्यालय के छात्र जीवन की स्मृतियाँ साझा करते हुए विभाजन–पूर्व शिक्षा, भारतीय संस्कृति, श्रीमद्भगवद्गीता तथा गायत्री मंत्र के जीवन–मूल्यों का उल्लेख किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र द्वारा ध्यान और वैश्विक कल्याण जैसे विषयों को दिए जा रहे महत्व का संदर्भ देते हुए विद्यार्थियों से अनुशासित जीवन, सकारात्मक सोच, पर्यावरण संरक्षण, सेवा–भाव तथा मानवता के प्रति समर्पण का संदेश दिया।

दो दिवसीय सम्मेलन में विभिन्न समितियों में वैश्विक विषयों पर गंभीर विचार–विमर्श, शोध–आधारित बहस, प्रस्ताव निर्माण तथा कूटनीतिक संवाद हुए।

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। ऐसे बधाई देते हुए भविष्य में भी ऐसे शैक्षिक मंचों के आयोजन की आवश्यकता और प्रासंगिकता पर बल दिया।

डी.ए.वी. नरेला में प्रकृति संरक्षण व पर्यावरण शुद्धि

डी.ए.वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल, नरेला (दिल्ली) में आर्य युवा समाज इकाई के तत्त्वावधान में वन महोत्सव मनाया गया। इस सन्दर्भ में पौधारोपण का व्यापक आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम वैदिक यज्ञ से पर्यावरण शुद्धि का संकल्प लिया गया। यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अनुपमा बिन्द्रा ने आहुतियाँ दीं। उनके साथ अध्यापक/अध्यापिकाओं सहित युवा समाज के सदस्यों ने यज्ञ में अपनी सहभागिता दी।

यज्ञोपरान्त पौधारोपण की प्रक्रिया विद्यालय के परिसर से आरम्भ हुई। **'सर्वे सन्तु निरामयाः'** का संकल्प लेकर छात्र आर्यसमाज नरेला में पहुँचे और वहाँ पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

प्राचार्या श्रीमती अनुपमा बिन्द्रा ने युवाओं की इस रचनात्मक पहल पर बधाई देते हुए कहा प्रकृति मानव जीवन के लिए अमूल्य उपहार है इसका संरक्षण करना हमारा परम कर्तव्य है। उन्होंने बिगड़ते पर्यावरणीय संतुलन की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया और पूर्ण समर्पण से इस चुनौती से लड़ने की प्रेरणा दी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**